सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक) 30 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जनवरी, 2017 वर्ष 15 अंक 11

रब को अपने मत भूलो

करो तरक़्क़ी जितनी चाहो रब को अपने मत भूलो
जहां हमेशा रहना है उस देश को अपने मत भूलो
इस दुन्या में तो उन्नति से इस्लाम ने रोका कभी नहीं
जाइज़ और न जाइज़ की तुम हदों को उस की मत भूलो
कहा नबी ने दुन्या का तुम अनुभव अच्छा रखते हो
जो करने से फलें खजूरें वह करना तुम मत छोड़ो
करोगे जैसा यहां तजरिबा ज्ञान तुम वैसा पाओगे
ज्ञान खुदा के बारे में तुम नबी से लेना मत भूलो
अगला जीवन बनेगा कैसे अनुभव से ना जानोगे
ज्ञान तो अगले जीवन का तुम नबी से लेना मत भूलो
रब को राज़ी करने को और रब की जन्नत पाने को
रब से मांगो नबी पे रहमत, उनकी ताअत मत भूलो

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह्यी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
बातें अल्लाह के भक्तों की	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
दीने इस्लाम का मिज़ाज	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	10
दियानतदारी और अमानत	अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी रह0	12
दीन इस्लाम की रूह और हम	मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0	16
मुस्लिम काल में सहिष्णुता	मुहम्मद इलियास हुसैन	18
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	22
दादा पोते	इदारा	24
जनवरी छब्बीस है	इदारा	25
मानवता का संदेश	हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0	26
भारतीय राजा चैरामन	इं0 जावेद इक़बाल	31
अल्पसंख्यकों के प्रति जिम्मेदारी	मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	33
उन पे लाखों दुरूद (पद्य)		35
दुआ (विनय)	सम्पादक	36
कालिजों में मुस्लिम छात्रों	उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी	37
सामान्य रूप से पाया जाने वाला.....		39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद- और अगर तुम मर गए या मारे गए तो निश्चित रूप से अल्लाह ही के पास इकट्ठे किये जाओगे (158) बस अल्लाह ही की कृपा थी कि आपने उन के साथ नर्मी की और अगर आप क्रूर स्वभाव कठोर हृदय के होते तो वे आप के पास से कब के बिखर गए होते बस आप उनको माफ़ कीजिए और उनके लिए माफी की प्रार्थना कीजिए और मामलों में उनसे परामर्श लेते रहिए फिर जब आप पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा कीजिए बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को पसंद करता है[1](159) अगर अल्लाह ने तुम्हारी मदद की तो कोई तुम पर हावी न होगा और अगर उसने तुम्हें छोड़ दिया तो कौन है जो उसके बाद तुम्हारी मदद करेगा और ईमान वालों को तो केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (160) और नबी की यह शान नहीं कि वह कुछ छिपा ले और जो भी छिपाएगा वह छिपाई हुई चीज़ ले कर क़यामत के दिन हाज़िर हो जाएगा फिर जिसने जो भी किया है उसका पूरा पूरा बदला उसको दे दिया जाएगा और उन पर कुछ भी अत्याचार न किया जाएगा[2](161) भला जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला हो क्या वह उस व्यक्ति की तरह हो सकता है जो अल्लाह का प्रकोप ले कर पलटा हो और उसका ठिकाना दोज़ख़ हो और वह बहुत बुरा ठिकाना है[3](162) अल्लाह के यहां उन लोगों के दर्जे हैं और अल्लाह उनके कामों को खूब देख रहा है[4](163) बेशक अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनके बीच उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा जो अल्लाह की आयतें उनको पढ़ कर सुनाता है और उनके जीवन को संवारता है और उंनको किताब व हिकमत की शिक्षा देता है जब कि वे इससे पहले निःसंदेह खुली गुमराही में थे[5](164) और जिस समय तुम्हें तकलीफ़ पहुंची जब कि तुम अपने दुश्मन को दो गुनी तकलीफ़ पहुंचा चुके थे तो क्या तुम यह नहीं कहने लगे कि यह (मुसीबत) कहां से आई, आप कह दीजिए यह तो खुद तुम्हारे पास से आई, बेशक अल्लाह तो हर चीज़ पर पूरा सामर्थ्य रखता है[6](165) और दो सेनाओं की मुठभेड़ के दिन तुम्हें जिस मुसीबत का सामना करना पड़ा वह अल्लाह ही के आदेश से हुआ ताकि वह ईमान वालों को भी परख ले(166) और उनको भी जान ले जिन्होंने निफ़ाक़ (कपटाचार) किया और उनसे कहा गया कि आओ

अल्लाह के रास्ते में लड़ो या दुश्मन को हटाओ, वे बोले कि लड़ाई हम को मालूम होती तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते[7] उस दिन वे ईमान की तुलना कुफ़्र (इनकार) से अधिक निकट हैं, वे अपनी ज़बानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और जो कुछ भी वे छिपाते हैं अल्लाह उसको खूब जानता है (167) जिन्होंने अपने भाईयों से कहा और खुद बैठ रहे कि अगर वे भी हमारा साथ देते तो मारे न जाते, आप कह दीजिए बस अपने ऊपर से मौत को टाल कर दिखाओ अगर तुम सच्चे हो (168) और जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए तुम उनको हरगिज़ मुर्दा मत समझो बल्कि वे अपने पालनहार के पास ज़िन्दा हैं सम्मानित किये जा रहे हैं (169) अल्लाह ने अपनी कृपा से जो कुछ उनको दे रखा है उसमें मज़े कर रहे हैं और खुशखबरी देना चाहते हैं अपने बाद वालों को जो अभी तक उनसे नहीं मिले कि उन पर न कुछ भय होगा और न वे दुखी होंगे[8](170) वे अल्लाह की नेमत और उस की मेहरबानी से बहुत खुश हो रहे हैं और अल्लाह और पैग़म्बर की बात मानी ऐसे बेहतर काम करने वालों और परहेज़गारों के लिए बड़ा बदला है[9](172) वे लोग कि जिनसे कहने वालों ने कहा कि (मक्का के) लोगों ने तुम्हारे खिलाफ़ बड़ा जत्था इकटठा कर रखा है तो उन से डरो तो इस चीज़ ने उनके ईमान में और बढ़ोत्तरी कर दी और वे बोले हमारे लिए तो अल्लाह काफ़ी है वह बहुत अच्छा काम बनाने वाला है[10](173)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नर्मी का वर्णन है और इसी पर क़ायम रहने के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ताकीद भी की गई है और यह इशारा भी है कि एक सलाह लोगों की ओर से गलत आ गई कि मदीने से निकल कर हमला किया जाए तो हर सलाह गलत न होगी, आप मश्वरा करते रहें और जो राय क़ायम हो जाए अल्लाह के भरोसे उस पर अमल करें।

2. इसी में ताकीद की जा रही है कि वे पैग़म्बर के विषय में थोड़े भी बुरा विचार न रखें उनकी शान बहुत ऊँची है, माल-ए-ग़नीमत (युद्ध में शत्रु धन) में कोई चादर मिल नहीं रही थी, कुछ लोगोंने सोचा कि शायद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रख ली हो, उस पर यह आयत उतरी।

3. पैग़म्बर जो हर हाल में अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार काम करता है और दूसरों को उसकी मर्ज़ी के अधीन बनाता है क्या वह ऐसे काम कर सकता है जो अल्लाह के गुस्से को आमंत्रित करे।

4. पैग़म्बर और सारे इंसान बराबर नहीं हो सकते, तुच्छ काम पैग़म्बरों से हो ही नहीं सकते, अल्लाह सब को जानता है और सब के कामों को देखता है।

5. पैग़म्बर के आने के उद्देश्य बताए जा रहे हैं।

6. बद्र युद्ध में तुम ने सत्तर को मारा और सत्तर को क़ैदी

शेष पृष्ठ .....23 पर.

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

ग़ीबत के वैध होने का बयानः-

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आने की इजाज़त चाही, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उसको इजाज़त दे दो, और फरमाया यह अपनी कौम में सब से बुरा आदमी है।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया फुलां और फुलां के मुतअल्लिक मेरा गुमान है कि वह हमारे दीन को कुछ नहीं जानते। (बुखारी)

हजरत लैस बिन सअद जो इस हदीस के रावी हैं वह कहते हैं यह दोनों आदमी मुनाफिक थे।

हज़रत फातिमा बिन्ते क़ैस से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुई और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबुल जहम और मुआविया ने मुझ को निकाह का पैगाम दिया है। आपने फरमाया मुआविया गरीब आदमी हैं उन के पास रूपया नहीं, और अबुल जहम अपने कांधे से लकड़ी नहीं उतारते।

(बुखारी—मुस्लिम)

कांधे से लकड़ी न उतारने का मकसद है कि औरतों को मारते हैं और बाज ने यह माने लिये हैं कि सफर बहुत करने वाले हैं।

हज़रत ज़ैद बिन अरकम रज़ि0 से रिवायत है कि हम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफर में गये, उस सफर में लोगों को बहुत तकलीफ हुई, अब्दुल्लाह बिन उबै ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों पर खर्च न करो तो वह आप ही आप हट जायेंगे और कहा अगर हम मदीना वापस गये तो कसम है इज़्ज़त वाला ज़लील को निकाल देगा। हजरत ज़ैद बिन अरकम कहते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ और पूरी बात आपसे बयान कर दी। आप ने अब्दुल्लाह बिन उबै को बुलवाया, उसने कसम खाई कि मैं ने नहीं कहा लोगों ने कहा जैद रज़ि0 ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से झूठी बात कह दी, यह सुन कर मुझे बहुत तकलीफ हुई, उस समय अल्लाह तआला ने मेरी बात की तस्दीक में "इजा जा अकल मुनाफिकून" उतारी फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन को बुलाया कि उनके लिए इस्तिगफार कर दें मगर उन्होंने आने से इन्कार कर दिया और न आये।

(बुखारी—मुस्लिम)

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि सुफयान रज़ि0 की बीवी हिन्दा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुई और कहा रसूलुल्लाह मेरे शौहर सुफयान

शेष पृष्ठ ....17..पर.

बातें अल्लाह के भक्तों (वलियों) की

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लाम स्वीकार करने में ज़बरदस्ती नहीः– (अलबक़राः256)

इस्लाम धर्म स्वीकार करने में कोई ज़बरदस्ती नहीं अल्लाह के अन्तिम नबी पर उतारे गये पवित्र कुर्आन तथा अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वभाव तथा उनके कथनों द्वारा सत्य अर्थात इस्लाम और असत्य यानी कुफ़्र दोनों स्पष्ट हो चुके पर जिस ने असत्य को नकार कर सत्य को अपना लिया अर्थात अल्लाह को मान लिया और उसके आज्ञा पालन को स्वीकार कर लिया तो उसने सुदृढ़ सहारा पा लिया ऐसा सहारा जो कभी टूटने वाला नहीं। दीन (धर्म) का सम्बन्ध मन से होता है और दबाव तथा ज़बरदस्ती का सम्बन्ध शरीर से, यदि किसी से ज़बरदस्ती इस्लाम स्वीकार कराया जाये तो वह इस्लाम नहीं, और ऐसा व्यक्ति मुसलमान नहीं, इसी लिए कहा गया कि दीन में ज़बरदस्ती नहीं दूसरी जगह अल्लाह तआला ने अपने अंतिम नबी से कहा कि आप इस्लाम नकारने वालों से स्पष्ट कह दें कि ऐ इस्लाम को नकारने वालो तुम जिसकी उपासना करते हो मैं उसकी उपासना नहीं कर सकता और तुम अपने इन्कार के कारण जिस की मैं उपासना करता हूं तुम उस की उपासना करने वाले नही हो सकते और न ही मैं तुम्हारे उपास्यों का, उपासक बन सकता हूं, और न तुम उस की उपासना करने वाले हो जिस की मैं उपासना करता हूं तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए, मेरा दीन मेरे लिए।

यही बात दूसरी जगह सूरतुल कहफ में बताई गई है और अल्लाह तआला ने अपने अंतिम नबी को आदेश दिया कि तुम कहो यह इस्लाम जो मैं लेकर आया हूं और जिसकी दावत मैं दे रहा हूं यह सत्य है अल्लाह का भेजा हुआ है, जिसका जी चाहे इसको स्वीकार करे और जिसका जी न चाहे स्वीकार न करे स्वीकार करने में जबरदस्ती नहीं परन्तु नकारने वालों और स्वीकार करने वालों का परिणाम सुन लो इस्लाम के सत्य को नकारने वालों को ज़ालिम (अत्याचारी) कहा गया है। और अल्लाह तआला ने सूचित किया कि हमने इन्कार करने वालों जालिमों (अत्याचारीयों) के लिए आग अर्थात जहन्नम तैयार कर रखी है, उसमें ऐसे जालिमों को आग की कनातें घेरे होंगी वह वहां जब प्यास से व्याकुल हो कर पानी मांगे गे तो उनको आग में पिघलाए हुए तांबे के समान पानी पिलाया जायेगा जो उनके मुखड़ों को झुलस कर रख देगा और वह बहुत ही खराब पीने की चीज है और वह उनके रहने का बहुत बुरा ठिकाना है। निःसंदेह जिन लोगों ने इस्लाम के सत्य को स्वीकार कर लिया, ईमान ले आए और भले काम किये उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनमें स्वच्छ पानी की नहरें बह रही होंगी उनको वहां जन्नती सोने के कंगन पहनाए जायेंगे और हरे

रेशम के अच्छे–अच्छे वस्त्र पहनाए जाएंगे। वह वहां सुनहरी मसेहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे। कितना अच्छा बदला होगा वह और कितना अच्छा ठिकाना होगा उनके रहने का।

पवित्र कुर्आन में कई जगह जहन्नम का परिचय दिया गया है जिसको पढ़ कर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। तथा पवित्र कुर्आन में जगह जगह जन्नत की नेअ़मतों का बयान आया है उसे पढ़ कर बस अल्लाह का शुक्र ही अदा करते बनता है पस इस स्पष्टता के पश्चात मनुष्य को अधिकार है इस्लाम ग्रहण करे या नकारे, दीन में कोई जबरदस्ती नहीं।

स्पष्ट है जो ईमान के परिणाम और कुफ़्र के परिणाम को जो पवित्र कुर्आन में बताये गये को सत्य मान लेगा वह ईमान लाये बिना न रहेगा। इस्लाम का इन्कार वही करेगा जो कुर्आन की बातों पर विश्वास न लाएगा, कुर्आन की बातें शत प्रतिशत सत्य हैं न मानने वाला अपना परिणाम खुद भोगेगा।

अल्लाह ईमान वालों का वली है, दोस्त है, मददगार है:-

अल्लाह तआला ईमान वालों का दोस्त है, वली है, मददगार है, जिसका अल्लाह दोस्त वह अल्लाह का दोस्त अर्थात वह अल्लाह का वली है, परन्तु अल्लाह के वलियों की श्रेणियां हैं जो अल्लाह पर जितना दृढ़ विश्वास रखेगा वह उतना ही ऊँचा अल्लाह का दोस्त वली होगा, अलबत्ता कुछ अनुमान उसके भले कर्मों से लगाया जा सकता है कि वह अल्लाह का वली है। अल्लाह ईमान वालों का दोस्त है, मददगार है, अल्लाह अपने दोस्तों को अंधेरे से निकालकर प्रकाश में लाता है, अंधेरे से तात्पर्य यहां वह रात का अंधेरा नहीं है जिसको चराग़ जला कर या राड जला कर दूर कर लेते हैं, अंधेरे से तात्पर्य यहां बुराईयों का अंधेरा है, कुफ़्र का अंधेरा है, शिर्क का अंधेरा है, अल्लाह के साथ साझी करने का अंधेरा है, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना का अंधेरा है, किसी की बहू, बेटी पर बुरी दृष्टि डालने का अंधेरा है, व्यभिचार का अंधेरा है, बलात्कार का अंधेरा है, चोरी डकैती, कामचोरी का अंधेरा है, घूस खाने और ब्याज खाने का अंधेरा है, आतंकवाद उग्रवाद तथा रक्तपात का अंधेरा है, अकारण शत्रुता तथा ईर्ष्या का अंधेरा है तात्पर्य यह है कि समस्त बुराईयों के अंधेरे से अल्लाह अपने दोस्तों को सत्य प्रकाश में लाता है नूर में लाता है, नूर से भी यहां बल्ब और राड जैसा नूर (प्रकाश) नहीं है। अपितु अपने पालनहार को पहचानने का नूर अल्लाह के गुणों को पहचानने का नूर अल्लाह और अल्लाह के रसूलों और अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज्ञा पालन का नूर, हलाल कमाई करने का नूर हलाल खाने का नूर, व्यापार में सच्चाई का नूर, मज़दूरी नौकरी में अपने कर्तव्यों के पालन का नूर सत्य बोलने तथा असत्य छोड़ने का नूर बेवाओं अनाथों, निर्धनों की सहायता करने का नूर सहानुभूति का नूर अर्थात यह कि समस्त भलाइयों को अपनाने का नूर वह नूर जो सत्य तथा असत्य के अन्तर

को स्पष्ट कर दे। अल्लाह तआला ईमान वाले अपने दोस्तों को बुराईयों की अंधेरियों से निकाल कर भलाई के उजालों में लाता है, ऊपर जो कहा गया कि उसके कर्मों से उसको आंका जा सकता है कि वह किस दर्जे का अल्लाह का वली है लेकिन पूरी तरह किसी वली को पहचानना सरल नहीं है अल्लाह ही जानता है कि उसका कौन सा दोस्त किस दर्जे का है, परन्तु इस्लाम में जिन बातों को अनिवार्य किया गया है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात हज आदि अगर इनको छोड़ने वाला है, हलाल हराम में अंतर न करने वाला है तो वह अल्लाह का वली नहीं हो सकता।

अल्लाह के इन्कार करने वालों का परिणामः-

जिन लोगों ने अल्लाह का इन्कार किया अल्लाह के अंतिम नबी को न माना, शयातीन उनके दोस्त हैं, वह शैतान उनको भलाइयों के प्रकाश से अर्थात नूर से निकाल कर बुराईयों के अंधेरे में पहुंचा देते हैं, ऐसे ही लोग चोरी, डकैती करते हैं, आतंकवादी और उग्रवादी हो जाते हैं, अकारण लोगों को कष्ट पहुंचाते हैं लोगों की जानें लेते हैं दूसरे की बहू बेटियों की इज़्ज़त पर हमला करते हैं आदि।

ऐसे ही लोग आग वाले हैं अर्थात जहन्नम उनका ठिकाना है, इनमें जो लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते अल्लाह के अंतिम रसूल को नहीं मानते वह सदैव जहन्नम में जलेंगे जहन्नम आग का घर है वहां के कष्ट को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता फिर उस जहन्नम में मौत नहीं है इस संसार में कोई आग में गिर गया तो थोड़ी देर में उसका कष्ट समाप्त हो जाएगा यानि मौत उसका काम तमाम कर देगी परन्तु जहन्नम की आग में वह जलता रहेगा, चीखता रहेगा, लेकिन प्राण न निकलेंगे, अल्लाह जहन्नम से बचाए।

अल्लाह के वलियों की पहचानः-

अल्लाह की ओर से एलान किया गया है कि सुनो अल्लाह के वलियों, अल्लाह के दोस्तों, अल्लाह के भक्तों को न कोई भय होगा, न ही वह लोग दुखी होंगे, यह वह लोग हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और तक़्वे की ज़िन्दगी गुजारते हैं अर्थात संयमी जीवन बिताते हैं अपने रब के आज्ञाकारी होते हैं अगले जीवन के लिए चिंतित रहते हैं अगले जीवन को हम तीन भागों में बांट सकते हैं क़ब्र का लम्बा जीवन, हश्र के मैदान का जीवन और उसके पश्चात जहन्नम या जन्नत का ठिकाना, अल्लाह के वलियों को अर्थात अल्लाह पर ईमान लाने वालों और अल्लाह के अंतिम रसूल की बताई हुई सारी बातों को मानने वाले अगले जीवन के इन तीनों भागों में भय, दुख से सुरक्षित रहेंगे और सुख का जीवन पायेंगे, क़ब्र का अ़जाब हक़ है जब ही तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ब्र के अ़जाब से पनाह मांगने की दुआ उम्मत को सिखाई है, आम ईमान लाने वालों को अपने गुनाहों के सबब क़ब्र में कष्ट उठाना पड़ सकता है लेकिन अल्लाह के विशेष भक्तों (वलायते ख़ास्सा) वालों को इन्शा अल्लाह क़ब्र में भी सुख का जीवन मिलेगा वह आराम की नींद सोयेंगे और जब जागेंगे तो अल्लाह की मदद से अपने दोस्तों के पास आयें जायेंगे, हश्र के

मैदान में जब धूप की तेज़ी से सब व्याकुल होंगे तो उनको अल्लाह के अर्श की विशेष छांव मिलेगी, जब सब प्यास से व्याकुल होंगे तो उनको कौसर का जल मिलेगा जिसको पी कर उनको फिर प्यास न लगेगी, सिरात के पुल पर वह सरलता से गुज़र कर जन्नत में प्रवेश करेंगे फिर जन्नत की नेमतों का क्या कहना जिनका बयान पवित्र कुर्आन में अनेक जगहों पर आया है अर्थात अल्लाह के वलियों को अगले जीवन के हर चरण में सुख ही सुख मिलेगा न उनके लिए भय होगा न दुख। रही बात इस संसार की तो पवित्र कुर्आन में उनको इस संसार के लिए भी शुभ सूचना दी गई है और अगले जीवन के लिए भी "लहुमुल, बुशरा फिल हयातिद्दुन्या व फिल आख़िरति" लेकिन इस संसार में शुभ सूचना का अर्थ है कि अल्लाह तआला बुराईयों से उनकी सुरक्षा करेगा लेकिन इस संसार में उनकी परीक्षा अवश्य होगी पवित्र कुर्आन में कहा गया है कि "क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वह कहें हम ईमान लाये और उनको छोड़ दिया जाये और जांचा न जाये" दूसरी जगह फरमाया "ऐ मेरे ईमान वाले बन्दों हम तुम को अवश्य जांचेंगे कुछ भय से, भूख से तथा जान माल की हानि से" फिर फरमाया "ऐसे धैर्य वालों को शुभ सूचना दे दीजिए जो विपत्ति (मुसीबत) आने पर कह उठते हैं कि हम तो अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं" इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह वाले भी इस संसार में भय तथा दुख से दो चार होते हैं लेकिन उनके मन को शांति प्राप्त रहती है।

करामातः-

कभी अल्लाह तआ़ला अपने विशेष भक्तों (वलियों) का सम्मान बढ़ाने के लिए उनके द्वारा कुछ अद्भुत बातें भी प्रकट कराता है जिसको करामत कहते हैं परन्तु करामत अल्लाह के वलियों की पहचान नहीं है यह भी हो सकता है कि कोई उच्चकोटि का अल्लाह का भक्त हो परन्तु उससे जीवन भर कोई करामत न ज़ाहिर हो, वली की पहचान ईमान और तक्वे का जीवन है करामात नही।

यह याद रहे यहां अल्लाह के वली से हमारा तात्पर्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान ला कर उनकी पैरवी (अनुकरण) करने वालों से है उसमें तमाम सहाबा भी हैं और दूसरे ईमान वाले भी मगर याद रहे कोई वली जो सहाबी न हो चाहे जितने ऊँचे दर्जे का वली हो किसी कम से कम दर्जे के सहाबी की बराबरी को नहीं पहुंच सकता अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सब को अपनी महब्बत प्रदान करे अपने सब नबियों की महब्बत प्रदान करे और विशेष कर अपने प्रिय अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत और इताअत प्रदान करे और तमाम औलिया उल्लाह की महब्बत भी प्रदान करे आमीन।

नोटः- यह लेख निम्नलिख आयतों के अध्ययन तथा मनन के प्रकाश में लिखा गया है:-

सूरतुल बकरहः 155,156, 256,257। सू-रए- यूनुसः 62,63। सूरतुलकहफ़: 21, अलअनकबूतः 2,3 सूरतुल्फ़ातिरः 36, सूरतुल्काफिरून।

❖❖❖

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी नुमायां ख़ुसूसियात

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनु0 मु0 हसन अंसारी

तौहीद, दीन ख़ालिस और शिर्कः-

इबादत की बुन्याद अक़ायद और ईमान के सही होने पर है। जिस के अक़ायद में ख़लल और ईमान में बिगाड़ हो उसकी न कोई इबादत मक़बूल न उस का कोई अमल सही माना जायेगा। और जिस का अक़ीदा दुरुस्त और ईमान सही हो उसका थोड़ा अमल बहुत है। इसलिए हर शख़्स को कोशिश करना चाहिए कि उसका ईमान व अक़ीदा सही हो।

साफ़ ज़ेहन गहराई और हक़ की तलाश के जज़बे के साथ कुर्आन के अध्ययन से यह बात रौशन हो चुकी है कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने के कुफ़्फ़ार अपने झूठे खुदाओं को अल्लाह का बिल्कुल हमसर और हम मर्तबा क़रार नहीं देते थे बल्कि वह यह तस्लीम करते थे कि वह मख़लूक़ और बन्दें हैं। उनका कभी यह अक़ीदा नहीं था कि उनके माबूद कुदरत व ताक़त में किसी तरह कम नहीं और वह खुदा के साथ एक ही पलड़े में हैं। उनका शिर्क सिर्फ़ यह था कि वह अपने झूठे खुदाओं को पुकारते, उनकी दुहाई देते, उन पर नज़रें चढ़ाते और उनके नामों पर कुर्बानियां करते। और उन को अल्लाह के यहां सिफ़ारिशी, मुश्किल कुशा और कारसाज़ समझते थे। इसलिए हर वह शख़्स जो किसी के साथ वही मामला करे जो कुफ़्फ़ार अपने झूठे खुदाओं के साथ करते थे तो बावजूद इसके कि वह इसका इक़रार करता हो कि वह एक मख़लूक़ और खुदा का बन्दा है उसमें और जाहिलियत के ज़माने के बड़े से बड़े बुत परस्त में बहैसियत मुशरिक होने के कोई फ़र्क़ न होगा। हज़रत शाह वलीउल्लाह साहब फ़रमाते हैं:—

1. सिर्फ खुदा की तौहीद के चार दर्जात हैं।

2. आसमान व ज़मीन और तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ सिर्फ़ खुदा को समझना। यह दो वह हैं जिन से आसमानी किताबों ने बहस की ज़रूरत नहीं समझी। और न अरब के मुशरिकीन और यहूद व नसारा को इनके बारे में इख़्तिलाफ़ व इनकार था बल्कि कुर्आन इसकी सराहत करता है कि यह दोनों मर्तबे उनके नज़दीक मुसल्लमात में से हैं।

3. आसमान व ज़मीन और जो कुछ इसके दरमियान है, उसके इन्तेज़ाम को सिर्फ़ अल्लाह के साथ ख़ास समझना।

4. चौथा दर्जा यह है कि उसके अलावा किसी को इबादत का मुस्तहक़ न समझना।

"यह आखिर के दोनों दर्जे आपस में एक दूसरे से गहरा रब्त रखते हैं। इन्हीं दोनों से कुर्आन ने बहस की

है और काफ़िरों के शुकूक व शुब्हात का भरपूर जवाब दिया है।"

इससे यह मालूम होता है कि शिर्क के मानी सिर्फ़ यह नहीं कि किसी को खुदा का हमसर करार दिया जाये बल्कि शिर्क की हक़ीक़त यह है कि आदमी किसी के साथ वह काम या वह मामला करे जो खुदा ने अपनी ज़ात के साथ खास फरमाया है और जिसे बन्दगी का शेआर बनाया है जैसे किसी के सामने सज्दा करना, किसी के नाम पर कुर्बानी करना या नज़रें मानना, मुसीबत में किसी से मदद मांगना और यह समझना कि वह हर जगह हाज़िर व नाज़िर है और उस को कायनात में मुतर्सिफ़ (क़ाबिज़) समझना। यह सारी वह चीज़ें हैं जिन से शिर्क लाज़िम आता है। और इन्सान इनसे मुश्रिक हो जाता है। भले ही उसका यह अक़ीदा क्यों न हो कि यह इन्सान, फ़रिश्ता या जिन्न जिसको वह सज्दा कर रहा है, नज़रें मान रहा है और जिससे मदद मांग रहा है, अल्लाह तआला से बहुत कम मर्तबा हैं। और चाहे यह मानता हो कि अल्लाह ही ख़ालिक़ है और यह उसका बन्दा है। इस मामले में अंबिया, औलिया, जिन्न और शयातीन, भूत प्रेत सब बराबर हैं। इनमें से किसी के साथ भी जो यह मामला करेगा वह मुशरिक क़रार दिया जायेगा। यही वजह है कि अल्लाह तआला उन यहूद व नसारा पर जिन्होंने अपने राहिबों पादरियों और पुरोहितों के बारे में इस तरह का मामला किया, ग़ज़ब व नाराज़गी का इज़हार किया इरशाद होता है:–

तर्जुमाः *"उन्होंने अपने उल्मा और मशायख़ और मसीह इब्न मरियम को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक अल्लाह के सिवाए किसी की इबादत न करें। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और वह इन लोगों के शरीक मुक़र्रर करने से पाक है।"*

(सूरःतौबा–39)

शिर्क के मज़ाहिर व आमाल और जाहिली रस्में:–

इस उसूली बात के बाद ज़रूरत है कि उन जाहिली रस्मों की निशानदेही कर दी जाये जो सही इस्लामी तालीमात से दूर और महरूम माहौल में रिवाज पा गयीं।

सब कुछ का इल्म और हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखना अल्लाह की खुसूसियात में से है। और इबादत का अमल जैसे– सज्दा या रूकू का किसी के सामने करना, किसी के नाम पर और उसकी खुशनूदी के लिए, रोज़ा रखना, दूर दूर से एहतमाम के साथ किसी जगह के लिए लंबे लंबे सफ़र करके जाना और उसके साथ वह मामला करना जो बैतुल्लाह को ज़ेबा है, और वहां कुर्बानी के जानवर ले जाना, नज़रें और मिन्नतें मानना शिर्क के काम और शिर्क के मज़ाहिर हैं। ताज़ीम के वह तरीक़े और अलामतें जो बन्दगी की मज़हर हों सिर्फ़ खुदा के साथ खास हैं। इल्म–ए–ग़ैब (परलौकिक ज्ञान) सिर्फ़ खुदा को है और इन्सानी कुदरत से बाहर है। दिलों में भेद और नियतों का

शेष पृष्ठ .....34...पर..

दियानतदारी और अमानत (सत्यता तथा न्यास धारिता)

—अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी रह0

आपस के लेन देने के स्वभाव में जो महत्वपूर्ण बात है वह सत्यता तथा न्यास धारिता है जिस का उद्देश्य यह है कि मनुष्य अपने कारोबार में सत्यनिष्ठ तथा न्यास धारी रहे और जिस का जिस पर जितना अधिकार हो उस को पूरी सत्यता के साथ रत्ती रत्ती दे दे इस गुण को अरबी भाषा में "अमानत" कहते हैं जिस को हम न्यास धारिता अथवा न्यास धारण कह सकते हैं, अल्लाह तआला ने स्वयं अपनी शरई तक्लीफ (इस्लामिक विधान की जिम्मेदारी) को जिसे मानवजाति को सौंपा है उसे अमानत के शब्द से जाहिर किया है। पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआला ने फरमाया "हम ने अपनी "अमानत" (शरीअत की जिम्मेदारी) आस्मानों, ज़मीन और पहाड़ों के समक्ष रखी तो सब ने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डरे और इन्सान ने उसे उठा लिया निःसंदेह इन्सान (अपने ऊपर) अति करने वाला तथा नादान है"। (अहजाब: 72)

इससे सिद्ध हुआ कि पूरी इस्लामी शरीअत (इस्लामिक विधान) अल्लाह की अमानत है जो हम इन्सानों को सौंपी गई है अतः हमारा कर्तव्य है कि हम उस का पूरा पूरा हक दें अर्थात शरीअत की मांगें पूरी करें अन्यथा हम न्यास भंजक अथवा विश्वास घातक कहलाएंगे।

अल्लाह का फरिश्ता (दूत) जो अल्लाह का आदेश तथा सन्देश ले कर अल्लाह के रसूलों (संदेष्टाओं) पर उतरता था वह न्यास धारी (अमीन) होता था ताकि वह अल्लाह का जो आदेश तथा सन्देश बन्दों के लिए लाये वह हर प्रकार की कमी बेशी से सुरक्षित रहे अतः पवित्र कुर्आन में उस फरिश्ते का नाम अमीन रखा गया है। अतएव पवित्र कुर्आन में आया है "इस सन्देश (कुर्आन) को ले कर अमानत वाली (न्यासधारी) रूह —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद उतरी"। (अश्शुअराः 193)

दूसरी जगह आया है "(फरिश्तों द्वारा) उस का हुक्म माना जाता है वहां वह अमीन (विश्वास पात्र) है। (तक्वीरः21)

अधिकांश पैगम्बरों के गुणों में यह शब्द प्रयोग हुआ है उन्होंने अपनी अपनी उम्मत से कहा "मैं तुम्हारे लिए न्यास धारी सन्देशटा हूँ"। (शुअराः 107)

अर्थात अल्लाह की ओर से जो सन्देश तुम्हारे लिए मिला है उस में किसी प्रकार की कमी बेशी किये बिना तुम तक पहुंचाता हूं इस में अपनी तरफ से कोई मिलावट नहीं है।

हमारे प्रिय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबूवत से पहले मक्के वालों की ओर से अमीन की उपाधि मिली थी इसलिए कि आप अपने कारोबार में न्यासधारी तथा सत्यनिष्ठ थे और जो वस्तुएं धरोहर आदि लोग आप के पास रखवाते थे वह उन को वापस कर देते थे।

सदाचारी (नेक) मुसलमानों का गुण पवित्र कुर्आन में यह बताया गया *"और जो अपनी अमानतों तथा अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं"।* (अलमोमिनून:8)

बाज रिवायतों में है कि काबा के घर की कुंजी "उस्मान बिन तलहा बिन अब्दुद्दार शैबी" के पास रहती थी फत्हे मक्का के वक्त वह उन के हाथ से जबरदस्ती ले ली गई तो यह आयत उतरी *"निःसंदेह अल्लाह तुम को आदेश देता है कि लोगों की अमानतों (न्यासों) को उन को लौटा दिया करो"।*

(निसा:85)

इस आदेश के अनुसार वह अमानत अर्थात कुंजी उन को वापस की गई उन्होंने कारण पूछा तो हज़रत अली रज़ि0 ने उत्तर दिया कि अल्लाह ने यही आदेश दिया है वह उस समय तक मुसलमान नहीं हुए थे, इस्लाम के न्याय तथा अमानतदारी के इस आदेश से ऐसे प्रभावित हुए कि मुसलमान हो गये, यद्यपि यह आयत यहां इस घटना के कारण अवतरित होना बताई गई है परन्तु यह आयत अमानत के तमाम भागों के लिए व्यापक है अतः मुफस्सिरीन (टीका कारों) के निकट इस आयत में वह अमानत (शरई जिम्मेदारी) भी सम्मिलित है जिसका उल्लेख ऊपर सू–रए–अहजाब की आयत 72 के हवाले से किया जा चुका है तथा वह अमानत भी इसमें आती है जिस को न्याय कहते हैं और जो शासकों पर अपनी प्रजा के लिए अनिवार्य है वह तमाम अमानतें भी इसमें शामिल हैं जिन का उन के मालिकों को लौटाया जाना अनिवार्य है।

इस विस्तार से ज्ञात हुआ कि अमानत रूपये पैसे सम्पति तथा धन तक सीमित नहीं है जैसा कि साधारण लोग समझते हैं अपितु हर वित्तीय, वैधानिक तथा नैतिक न्यास (अमानत तक व्यापक है) अगर किसी की कोई चीज़ आप के पास अमानत रखी है तो उस का उस मालिक को ज्युं की त्युं वापस करना आप पर अनिवार्य है अगर किसी का हक आप पर बाकी है तो उस का उसे दे देना अमानत है किसी का कोई भेद आप को मालूम है तो उस का छिपाना भी अमानत है, किसी सभा में आप किसी दूसरे से संबन्धित ऐसी बातें सुनें कि उन को किसी से कहने में उपद्रव उत्पन्न होने का भय हो तो उन को छुपाना भी अमानत है किसी ने आप से अपने किसी निजी काम में परामर्श मांगा तो आप को उस को छुपाये रखना और शुद्ध परामर्श देना भी अमानत है। अगर कोई किसी काम पर नौकर है तो उस से सम्बन्धित तमाम बातें जैसे समय पर आना, पूरे समय तक ड्यूटी पर रहना और जो काम दिये गये हैं उन को निष्ठा पूर्वक पूरा करना अमानत है अगर कोई किसी का 8 घण्टों का नौकर है और वह उस की अनुमति के बिना कुछ समय चुरा लेता है या अकारण छुट्टी कर लेता है या देर से आता है और समय से पहले चला जाता है तो यह भी अमानत

के विरुद्ध है न्यास भंजन है पवित्र कुर्आन तथा पवित्र हदीसों में यह सब बातें उल्लेखित हैं।

वह मुसलमान जिन को अल्लाह ने सफलता की शुभ सूचना दी है उनके विषय में है। *"और जो अपनी अमानतों (न्यासों) तथा अपनी प्रतिज्ञाओं का ध्यान रखते हैं"।*

(सूरः मूमिनूनः 8)

जिन मुसलमानों को जन्नत में सम्मान का स्थान मिलने वाला है वह भी इस आयत में दाखिल हैं जैसा कि सू–रए–मआरिज 32 में आया है।

"अगर किसी ने किसी को कोई चीज़ रखने को दी या सफर में गवाह न मिलने के सबब कर्ज लेने के लिए कोई चीज गिरवी रखी तो जो अमीन बनाया गया उसको चाहिए कि वह अपनी अमानत अदा कर दे और चाहिए कि अपने पालन हार अल्लाह से डरे"।

(सूरः बकराः 283)

इन्कार न कर दे और वापस करने में आना कानी और बहाने न गढ़े न उस अमानत में कोई कमी बेशी करे, अगर किसी ने हम पर भरोसा कर के हम से कोई भेद की बात बताई तो हम को चाहिए कि उस बात से गलत फायदा उठा कर उस के विरोध में कोई काम न कर बैठें, अगर हम ने ऐसा किया तो विश्वास घात (खियानत) किया जिस को इस्लाम में स्पष्ट रोका गया है पवित्र कुर्आन में है *"और अपनी अमानतों में जान बूझ कर खियानत (विश्वासघात) न करो"।*

(अनफालः 27)

हज़रत मूसा अलै0 ने मदयन के सफर में दो लड़कियों की बकरियों के पीने के लिए पानी भर दिया और उस की कोई मजदूरी उन से नहीं मांगी उन लड़कियों में से एक ने घर वापसी पर अपने बुजुर्ग बाप से हज़रत मूसा अलै0 की प्रशंसा की और सिफारिश की कि उन को नौकर रख लीजिए इस अवसर के लिए पवित्र कुर्आन में यूं आया है।

"ऐ मेरे बाप उन को मज़दूरी पर रख लीजिए। अच्छा व्यक्ति, जिसे आप मज़दूरी पर रखें, वही है जो बलवान, अमानतदार हो"।

(कससः26)

इस आयत में सब से अच्छे नौकर की पहचान यह बताई गई है कि वह जिस काम के लिए रखा जाये उस के पूरा करने का उस में बल हो और वह उस काम को पूरी अमानत से (निष्ठापूर्वक) पूरा करे, इस से यह नियम बना कि जिस को जिस काम के लिए रखा जाये वह उस काम को कर लेने की योग्यता अपने में सिद्ध करे और वह उस को पूरी निष्ठा के साथ पूरा करे। एक व्यक्ति जो 6 घण्टों का नौकर हो अगर वह एक दो घण्टे छुपे चोरी बैठा रहे काम न करे तो यद्यपि लोग उस को खाइन (विश्वासघाती) न समझेंगे परन्तु वह वास्तव में विश्वासघाती है अमानतदार नहीं है।

हदीस की कई किताबों में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जिस में अमानत (न्यास धारिता) नहीं उस में ईमान नहीं" और स्पष्ट है कि जब दिल ने एक जगह

धोखा दिया तो हर जगह धोखा दे सकता है।

जब किसी से कोई परामर्श लिया जाये तो उसे चाहिए कि सत्यनिष्ठा के साथ परामर्श दे, एक बार एक सहाबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से परामर्श चाहा तो आपने फरमाया "जिस से परामर्श चाहा जाये उस को अमानत सौंपी जाती है" इसी लिए किसी सभा में जो विशेष बातें हों वह अमानत हैं अर्थात एक जगह की विशेष बातें दूसरी जगह फैला कर उपद्रव न पैदा करना चाहिए सिवाये इस के कि उस बात से किसी उपद्रव को रोकने का काम लिया जाये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "सभाएं अमानत हैं" अर्थात सभाएं अमानत के साथ हों, परन्तु तीन अवसरों पर अमानत नहीं हैं। (1) कहीं किसी की अकारण हत्या की (2) या किसी की आबरूरेजी (सतीत्व भंजन) की (3) या किसी का माल अवैध ले लेने का षडयंत्र हो, इन दशाओं में सम्बन्धित लोगों को सूचित कर देना चाहिए यह बात अमानत के विरोध में न होगी।

किसी का भेद खोल देना भी अमानत (न्यास धारिता) के विरोध में है पति, पत्नी के बीच जो बातें होती हैं, वह भी भेद की बातें हैं उन का दूसरों पर प्रकट करना जहां अशलीलता की बात है वहीं अमानत के विरुद्ध भी है भेद की बात वही नहीं है जिसको भेद की बात कह कर बताया जाये, अपितु भेद की बात वह भी है जिस को तुम को बताने वाला भेद तो न कहे परन्तु दूसरे को बताना न चाहे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जब कोई व्यक्ति किसी से बात करे और बात करते समय इधर उधर देखे कि कोई सुन तो नही रहा है तो वह बात भी भेद और अमानत हो जाती है अमानत में खियानत (विश्वासघात) को अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "निफाक" की एक निशानी बताई है (जाहिर में इस्लाम और अन्दर से इस्लाम के विरोध को निफाक कहते हैं)।

कियामत की निशानियों में बताया गया है कि सब से पहले इस उम्मत से अमानत का गुण जाता रहे गा और सब के अन्त में जो चीज बाकी रहेगी वह नमाज़ होगी और कितने नमाज़ी हैं जिनकी नमाजों का अल्लाह के यहां कोई बदला नहीं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत उस वक्त तक शुद्ध अर्थ में उम्मत रहे गी जब तक वह अमानत को मुफ्त का माल और ज़कात देने को जुरमाना न समझेगी अर्थात अमानत की चीज़ को अपनी आय न समझेंगे और ज़कात अदा करने तथा भले कामों में खर्च करने को जो मुसलमान जुरमाना न समझेंगे तो वह शुद्ध उम्मत रहेंगे।

अल्लाह तआला हम सब को अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चा उम्मती बनाये। आमीन

❖❖❖

–देवनागरी लिपि में उर्दू

दीन इस्लाम की रूह और हम

–मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0

–हिन्दी लिपिः राशिदा नूरी

मौलाना रूमी रह0 अपनी मसनवी में एक हिकायत लिखते हैं कि हज़रत बा यजीद बुस्तामी रह0 के ज़माने में एक मुसलमान ने अपने एक ग़ैर मुस्लिम शनासा को दावते इस्लाम दी, उस शख्स ने जवाब में कहा ये तो बताओ किस इस्लाम की जानिब बुलाते हो? जो बा यज़ीद का है तो उस पर मैं तुम्हारी दावत से क़ब्ल ही ईमान रखता हूं, और उनके ईमान को अपने मरतबा व ज़र्फ़ से कहीं बेहतर व बुलन्द तर समझता हूं, लेकिन अगर उस इस्लाम की जानिब बुला रहे हो, जो खुद तुम्हारा है तो ऐसे दीन के मुकाबले में मेरी बे दीनी क्या बुरी है? आख़िर तुम्हारे दीन में क्या ख़ूबी है, जिसके लिए मैं अपने बाप दादा का तरीक़ा छोड़ दूं, अपनी हमेशा की आदतें छोड़ दूं, और एक नया जाद–ए–ज़िन्दगी इख़्तियार करूं।

क्या आज ये हिकायत हमारे लिए बे माना है उस मुसलमान से तो किसी एक शख्स ने ये सवाल किया होगा, लेकिन आज हमारे सामने हर आर्य, हर हिन्दू, हर ईसाई हर गैर मुस्लिम, की ज़बान इसी सवाल को दोहरा रही है, और हर ग़ैर मुस्लिम इसी सवाल का जवाब तलब कर रहा है, उसने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत पर, जिसकी नीची और शर्मीली निगाहों पर खुद हया और ग़ैरत कुर्बान हो जाती थी, आज के मुसलमानों पर बद मआशी और ओबाशी, बद नज़री और बद चलनी के इल्ज़ामात खुले ख़ज़ाने लगाये जा रहे हैं, कोई है जो इन इल्ज़ामात को बातिल कर दे? रास्त बाज़ों के उस सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कल्मा पढ़ने वाले, जिसकी अमानत व दयानत, सच्चाई और सफाई पर दुश्मनों तक को ऐतबार था, आज दुन्या में हर तरफ बे ऐतबार मशहूर हो रहे हैं, है कोई जो उनकी बिगड़ी हुई साख़ को दोबारा क़ाइम कर दे? सच्चों के उस पेशवा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हल्क़ा बगोश कहलाने वाले जिसे "अमीन" का लक़ब दोस्तों ने नहीं, दुशमनों ने दिया था, आज हिर्स व तमअ, निफाक़ व नफ़्सानीयत के शिकार हो रहे हैं, है कोई जो इन अमराज़ से शिफाए कुल्ली उन्हें दे दे? आप कहते हैं कि मज़हब का दर्द आप के भी दिल में है, आप फरमाते हैं कि इशाअ़त इस्लाम की तड़प आप को बेचैन किये हुए है ये सही, लेकिन ख़ुदारा सोचिये कि इस का इलाज क्या है? पुरज़ोर मज़ामीन लिखना, दूसरों के लिए दिल आज़ार नज़में लिखना दूसरों के पेशवाओं की तौहीन करना, दूसरों की तौहीन व बे इज़्ज़ती पर ख़ुश होना? या उसके बर अ़क्स खुद अपनी ज़िन्दगी को नेकी व नेक नफ़्सी, पाकी व पाकबाज़ी, रास्ती रास्तबाज़ी, के क़ालिब में ढाल लेना? आप किसी ग़ैर मुस्लिम से जब दोस्ती व ख़ैर अन्देशी, लुत्फ महब्बत की बात कहते हैं तो उसे इस्लाम से ज़ियादा करीब लाते हैं या उसका दिल दुखा कर या उस के बुज़ुर्गों को उसके सामने बुरा भला कह

कर? ग़ैरों के दिलों को मोह लेने की कौन सी तरकीब आपके हाथ में है? आया आप की हंगामा ख़ेज़ तक़रीरें, आपकी कमेटियां, आपके जलसे, आप के पोस्टर या उसके बर अक्स आप का अख़्लाक़ खुलूस, आपकी सच्चाई और दयानत आपकी पाक नज़री, और ज़ौके ख़िदमत गुज़ारी, आपको जिस वक़्त अपने दीन की महब्बत मग़लूब करती है तो आप मौलवी जी और लाजपत राय की हज्व में नज़्में तसनीफ़ कर डालते हैं, लेकिन खुद अपने ही दिल से पूछिये कि उन हजविया नज़्मों से आप कितने हिन्दुओं को मुसलमान बना सकते हैं या ये भी न सही तो ये कि कितनों को इस्लाम से क़रीब ला सकते हैं?

कठिन शब्दों के अर्थः-

रूह्= आत्मा, शनासा=परिचित, बायजीद=एक महा पुरुष का नाम, जा-दए-ज़िन्दगी= जीवन पद्धति, बदमआशी= दुष्टता, औबाशी=बुरे आचरण, बातिल=मिथ्या, रास्त बाज़ों= सच्चों, हल्क़ा बगोश=अनुयायी, अमीन=विश्वसनीय, शिफाए कुल्ली=पूर्ण स्वास्थ्य, हज्व= निन्दा।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी ....

बखील आदमी हैं, वह मुझे इतना देते हैं कि न मुझ को काफी होता है न मेरे बच्चों को, तो क्या मैं उन की लाइलमी (बिन बताये) कुछ ले सकती हूं, आप ने फरमाया हां इतना लो जो तुम को और तुम्हारी औलाद को काफी हो जाये। (बुखारी-मुस्लिम)

चुगली का बयानः-

हजरत हुजैफा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया चुगलखोर जन्नत में न जायेगा।

(बुखारी-मुस्लिम)

हजरत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो कब्रों के पास से गुजरे और फरमाया इन दोनों कब्र वालों पर अजाब हो रहा है और यह दोनों किसी बड़ी बात पर अज़ाब नहीं भुगत रहे हैं बल्कि हां बेशक बड़ी बात है, उन में से एक चुगली खाया करता था, दूसरा पेशाब की छींटों से बचने की कोशिश नहीं करता था। (बुखारी-मुस्लिम)

बुखारी की एक रिवायत में है कि उलमा ने इसके माने यह लिए हैं कि इन दोनों पर ऐसी बात पर अजाब हो रहा था जो उनके नजदीक बड़ी न थी और बाजों ने कहा इसका छोड़ना उन पर भारी था।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं तुम को बताऊँ तोहमत क्या चीज़ है, वह चुगली है जिस की वजह से लोगों में फसाद पड़ जाये। (मुस्लिम)

हाकिम तक बात न ले जाने का बयानः-

हजरत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कोई आदमी मुझ से मेरे सहाबा के बारे में कोई बात न कहे (अर्थात उन की कमियों और कोताहियों को न बयान करता फिरे कि फुलां ने ऐसा किया, फुलां ने ऐसा किया) क्योंकि मैं चाहताहूं कि मैं जब तुम लोगों के पास आऊँ तो मेरा दिल साफ हो (यानी किसी से मेरे दिल में रंज तथा मैल न हो।

(अबू दाऊद-तिर्मिजी)

-प्रस्तुति-
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मुस्लिम काल में सहिष्णुता

—मुहम्मद इलियास हुसैन

धार्मिक सहिष्णुता और सांप्रदायिक सदभाव का फूल मुस्लिम शासन काल में अपने पूरे रंग, सौन्दर्य और सुगंध के साथ खिला हुआ था। सांप्रदायिक सौहार्द का शांतिप्रद रंग समाज में बहुत गहरा था। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि सारे धर्मावलंबी प्रेम–भाव के साथ परस्पर मिल–जुल कर शांतिपूर्वक रहते थे। किसी भी प्रजा के साथ किसी प्रकार का भी धार्मिक भेद–भाव नहीं किया जाता था। बादशाह सभी धर्मों और उनके अनुयायियों के साथ उदारता और सहिष्णुता का व्यवहार करता था। इस बात की पुष्टि एक अंग्रेज़ पादरी फ़ादर टैरी के कथन से होता है। वह जहांगीर के शासन काल के सांप्रदायिक सद्भाव और सहिष्णुता के बारे में लिखता है, "सभी धर्मों के साथ सहिष्णुता का व्यवहार होता है और उनके पुरोहितों का आदर किया जाता है। मुझको ही मुग़ल बादशाह ने स्वयं फ़ादर कह कर पुकारा और अनेक कृपापूर्ण शब्दों का प्रयोग किया तथा उच्चतम अमीरों में स्थान दिया।"

अर्थात जहांगीर के शासन काल में सभी धर्मों के लोग मेल–जोल के साथ प्रेम–भाव से शांतिपूर्वक रहते थे। जहांगीर अपनी सल्तनत की प्रजा के साथ किसी प्रकार का धार्मिक भेद–भाव नहीं करता था। वह सभी धर्मों के प्रति उदार और सहिष्णु था। उसकी न्यायप्रियता आज भी कहावत के रूप में हमारे बीच प्रचलित है।

शाहजहां (1627–1658):–

शाहजहां एक न्यायप्रिय बादशाह था। एक अंग्रेज़ इतिहासकार ट्रेवर्नियर उसके शासन के बारे में लिखता है, "शाहजहां का शासन ऐसा था, जैसा एक पिता का अपने परिवार तथा बच्चों पर होता है।"

वस्तुतः शाहजहां अपने निष्पक्ष न्याय के लिए प्रसिद्ध था और अपराधियों को कठोर दण्ड देने में भी नहीं झिझकता था। दरबार के दिन वह अपने महल में एक विशिष्ट न्यायालय की व्यवस्था करता था और सभी की फ़रियाद सुनता था। वह क़ाज़ी के फ़ैसलों के विरुद्ध भी अपील सुनता था और बिना किसी पक्षपात के न्याय करता था। कड़े क़ानूनों एवं कठोर दण्डों के कारण अपराध बहुत कम होते थे।

औरंगजेब (1658–1707):–

औरंगज़ेब ने न्याय विभाग में सबसे अधिक सुधार लाया था और दो लाख रूपये व्यय करके 'फ़तावा–ए–आलमगीरी' नामक एक विशाल ग्रंथ तैयार करवाया, जिससे न्यायाधीशों को बहुत सुविधा हुई।

मुस्लिम शासन काल में भारत में अदालतें भी अधिकतर धर्म से प्रभावित हुए बिना निष्पक्ष रूप में अपना कार्य करती थीं। मुस्लिम शासन में क़ानून का मुख्य स्रोत शरीअत (कुर्आन और सुन्नत) थी, क्योंकि कुर्आन न्याय का घोषणापत्र

और मानवता का उद्धारक है। इसमें सबके साथ समान न्याय का सिद्धान्त मौजूद है। धार्मिक मामलों में आम तौर पर मुसलमानों के मुक़दमों के फ़ैसले मुफ़्तियों और ग़ैर–मुस्लिमों के मुकदमों के फ़ैसले उनके अपने धर्म के पुरोहितों द्वारा सुनाए जाते थे।

प्रायः सभी मुस्लिम बादशाहों ने न्याय और न्यायालय की समुचित व्यवस्था करने के आदर्श को स्वीकार किया। वे स्वयं भी बड़े से बड़े और छोटे से छोटे फ़रियादी तक की फ़रियाद सुनने को प्रस्तुत रहते और उनको 'दूध का दूध और पानी का पानी' जैसा इन्साफ़ दिलाने की कोशिश करते थे। फ़ैसला सुनाते समय इस बात की पूरी कोशिश करते थे कि फ़ैसले में मानवीय भूल कम से कम हो।

डॉक्टर विपिन बिहारी सिन्हा मुस्लिम बादशाहों की न्यायप्रियता का उल्लेख करते हुए कहते हैं, "जहांगीर की न्यायप्रियता आज भी कहावत के रूप में हमारे बीच प्रचलित है। औरंगज़ेब तथा शाहजहां बुधवार के दिन न्याय करते थे। सम्राट औरंगज़ेब ने यह नियम बनाया था कि सप्ताह में एक बार वह दस साधारण व्यक्तियों की फ़रियाद सुनेगा और उन्हें अपने पास बुला कर न्याय करेगा। अकबर तथा औरंगजेब ने न्यायाधीशों को ईमानदार, चरित्रवान परिश्रमी और निष्पक्ष रखने की ओर विशेष ध्यान दिया।

मुस्लिम बादशाहों की न्यायप्रियता के बारे लिखते समय यह बात ध्यान में रहनी चाहिए कि वे मुस्लिम बादशाह ज़रूर थे, इस्लाम के प्रतिनिधि, समाज–सुधारक, उपदेशक या धर्म प्रचारक नहीं थे। बादशाहत की अपेक्षाओं को ध्यान में रख कर दांव–पेंच की दृष्टि से कई बार कठोर क़दम उठाना ज़रूरी भी होता था और मानवीय भूल–ग़लतियों की संभावना भी हो सकती थी। इन सबके बावजूद यह सच्चाई है कि पूरी दुन्या की तथाकथित सभ्य और उन्नत जातियां उनके जैसे न्यायनिष्ठ, प्रजापालक और सदाचारी जन प्रतिनिधि आज तक दुन्या के सामने पेश नहीं कर सकी हैं और न ही इसकी संभावना है।

मुस्लिम बादशाहों ने न्याय और इन्साफ़ की अनूठी मिसाल पेश की है। इसलिए अनेक बादशाहों की न्यायप्रियता की मिसाल आज भी दी जाती है और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मुस्लिम शासन काल में मानवता की सेवा में बड़े–बड़े काम हुए हैं। ज्ञान एवं साहित्य, विकास एवं निर्माण, दर्शन एवं चिन्तन, विज्ञान एवं अन्वेषण इत्यादि क्षेत्रों में धीरे–धीरे विकास होता रहा, प्रगति होती रही और लोगों ने बड़े–बड़े कारनामे अंजाम दिए हैं और जहां तक समाज को सुधारने, इन्सान को सभ्य और शिष्ट बनाने, उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों को विकसित करने, जुल्म एवं अत्याचार को रोकने, मज़लूमों, मजबूरों एवं निस्सहाय लोगों की सहायता करने का सवाल है, मुस्लिम शासन काल आज के आक्रामक रूप धारण करते जा रहे काल जैसा कभी नहीं रहा। प्रजा पालन जन–कल्याण और जनसेवा में मुस्लिम बादशाह हमेशा अग्रणी रहे हैं। पक्षपात और पूर्वाग्रह के रंगीन ऐनक पहने मुट्ठी भर लोगों को मुस्लिम शासन काल में सब कुछ काला ही

काला नज़र आता है।

अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी लिखते हैं कि सारी दुन्या के धर्मों में केवल इस्लाम ही ऐसा धर्म है, जिसने यह दर्शन दुन्या के समक्ष पेश किया कि धर्म यक़ीन (विश्वास करने) का नाम है और यक़ीन तलवार की धार या भाले की नोक से नहीं पैदा किया जा सकता।

कड़वा सचः-

'फूट डालो और राज करो' की विषैली नीति के अंतर्गत अंग्रेज़ों ने हिन्दू–मुस्लिम के बीच फूट का जो ज़हरीला बीज बोया, वह आज एक विशाल विष–वृक्ष बन चुका है, जिसके कड़वे–कसैले फल विभिन्न रूपों में हमें आए दिन चखने पड़ते हैं। सांप्रदायिकता का प्रायोजित दानव समय–समय पर, खास कर चुनाव–पूर्व परिस्थितियों में तांडव नृत्य करने लगता है और उसकी मानव विरोधी घिनौनी हरकतों से इन्सानियत कलंकित और शर्मसार होने लगती है। घृणा, घृणा को जन्म देती है और घृणा पैदा करके शांति की कामना करना मूर्खता नहीं तो क्या है?

दुखद तथ्य यह है कि आज भी मुस्लिम बादशाहों का चरित्र–हनन करने वाली वर्चस्ववादी, सांप्रदायिक एवं स्वार्थी शक्तियां इतिहास को तोड़ने–मरोड़ने और उसे ग़लत रंग देने में लगी हुई हैं। वर्चस्ववादी शक्ति सत्ता पर क़ब्ज़ा करने के लिए नफ़रत की राजनीति का हथियार ही इस्तेमाल करती हैं।

लाला लाजपत राय मुस्लिम शासकों की शांतिप्रियता के बारे में लिखते हैंः–

"मुसलमान अच्छे थे या बुरे–उनमें एक बात तो थी और वह यह थी कि उन्होंने हिन्दुसतान को अपना वतन बना लिया, हिन्दुओं पर भरपूर भरोसा किया। उनको उच्चतम पदों पर नियुक्त किया और कभी क़ौमी नफ़रत उनकी कार्रवाई का उत्प्रेरक न होती थी"।

मशहूर समाचार–पत्रिका 'केसरी' (लाहौर) मुस्लिम शासन काल के बारे में लिखती हैः–

"इस्लामी सल्तनत जहां भी हुई, उसका सबसे बड़ा प्रभाव सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा। यही कारण था कि पुराकालीन हिन्दू लोग मुसलमानों के शासन में न केवल सुख–शांति और सुरक्षा के साथ रहे, बल्कि सल्तनत के अन्तरंग अधिकारी और मूलाधार बने रहे। किसी मुस्लिम शासक ने हिन्दुओं की सामाजिक जीवन–प्रणाली, क़ानून और धर्म को बरबाद करने की कोशिश नहीं की।"

इसी प्रकार एक फ्रांसिसी पर्यटक डॉक्टर "बनरियर" ने मुस्लिम बादशाहों द्वारा हिन्दू पर्सनल लॉ को सुरक्षित रखने और उसमें हस्तक्षेप न करने के बारे में लिखा है–

"मुस्लिम शासकों की शासन–प्रणाली का यह एक अंग है कि वे हिन्दुओं की परंपराओं में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते और उन्हें अपनी धार्मिक परंपराओं को पूरी करने की स्वतंत्रता देते हैं।"

आज के आक्रामक माहौल में क्या इसकी कल्पना की जा सकती है? सभ्यता– संस्कृति के वर्तमान संघर्ष कालीन संक्राति काल में, जब कि वर्चस्ववादी शक्तियां पूरी दुन्या में एक जुट हो कर मुसलमानों के ख़िलाफ़ संघर्षरत हैं और उपभोक्तावादी विलासी वर्ग को भोग– विलासिता की मदिरा पिला कर

उपभोक्तावादी संस्कृति के मायावी दलदल में फंसा कर लोगों को उल्लू बना कर सतत् सफलतापूर्वक अपना स्वार्थ साधती जा रही हैं। कमज़ोरों को और कमज़ोर बना कर अपना आर्थिक गुलाम बनाती जा रही हैं और उनका साम्राज्य विस्तार लगातार होता जा रहा है। यह कब और कहां जा कर रुकेगा? क्या मुस्लिम शासन काल जैसी स्वतंत्रता और न्याय यहां की प्रजा को कभी नसीब होगी या वह कुछ प्रतिशत स्वार्थी लोगों की दास बन कर रहने को मजबूर हो जाएगी?

मशहूर इस्लामी विद्वान और विचारक मुहम्मद फ़ारूक़ खां इस्लामी क़ानून के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं, "इस्लाम अपने अनुयायियों को ऐसे योद्धा के रूप में देखना चाहता है, जो बुराई के विरुद्ध निरन्तर संघर्षरत हों। उनका संघर्ष न्याय और शांति की स्थापना के लिए हो, बिगाड़ और उपद्रव फैलाने के लिए न हो।"

भारत में मुस्लिम काल के शासकों ने इस्लाम के इसी लक्ष्य को सदा ध्यान में रख कर शासन–प्रशासन का काम अंजाम देने की कोशिश की। शांति, समानता, मानव–एकता, भाईचारा और न्याय का शासन स्थापित करना ही उनका मक़सद था। इस्लामी क़ानून ही देश का क़ानून था, जिसमें दीवानी और फ़ौजदारी दोनों तक के क़ानून शामिल थे। हां, गैर– मुस्लिमों के शादी–विवाह, विरासत, जायदाद और मिलकियत के मामले उनके पारिवारिक क़ानून के अनुसार तय किये जाते थे। अंग्रेज़ों ने 1765 ई0 में भारतीय विधि व्यवस्था में आंशिक परिवर्तन किए। इस व्यवस्था में अंग्रेज़ जज, काज़ी, मुफ़्ती और पंडितों की सहायता से मुक़दमों के फ़ैसले सुनाते थे। 1862 ई0 में इस्लामी फ़ौजदारी क़ानून की जगह 'इंडियन पैनल कोड' और 1872 ई0 में इस्लामी गवाही कानून की जगह भारतीय साक्ष्य अधिनियम लागू किए गए, जो आज तक लागू हैं। इसमें भी मुसलमानों और अन्य दूसरी जातियों के पर्सनल लॉ को नहीं छेड़ा गया, भले ही इसे निकाह, तलाक, हिबा, विरासत, जायदाद, मिलकियत इत्यादि तक सीमित कर दिया गया।

इस प्रकार अंग्रेज़ों के शासन काल से पहले भारत में मुहम्मद बिन क़ासिम से ले कर बहादुर शाह ज़फ़र तक मुस्लिम शासित परिक्षेत्र में शरीअत–क़ानून ही लागू था, जिसके गुणों का अन्दाज़ा लॉर्ड विलियम बेंटिक के कथन से बखूबी हो जाता है। लॉर्ड विलियम बेंटिक ने मुस्लिम बादशाहों की न्यायप्रियता और अंग्रेज़ों की स्वार्थपूर्ण शोषक नीति का वर्णन इन शब्दों में किया है–

"प्रायः मुसलमानों का शासन काल हमारे शासनकाल से अच्छा रहा। उन्होंने जिस देश को जीता, उसे अपना वतन बना लिया। उन्होंने स्थानीय नागरिकों से शादियां कीं। उन के साथ घुल मिल गए। उन्होंने तमाम सहूलतें और सम्मान प्रदान किये। यहां तक कि शासक और शासित के हितों में कोई अन्तर नहीं रहा। इस प्रकार हमारी नीति बिल्कुल इसके विपरीत और प्रतिकूल रही–स्वार्थपूर्ण, बेजान और संवेदनहीन।

आपके प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न: फोन पर सम्पादक से पूछा गया कि हम लोग पढ़े लिखे मुहज़्ज़ब (सभ्य) हिन्दू भाइयों के बीच में रहते हैं वह हमें देख कर एहतराम में नमस्कार या नमस्ते कहते हैं जवाब में हम को क्या कहना चाहिए?

उत्तर: मेरे इल्म में नमस्कार के माने झुक कर आदाब बजा लाना या रुकूअ़ करना या सज्दा करना होता है इसलिए नमस्कार या नमस्ते का जवाब नमस्कार या नमस्ते से न दें बल्कि "नमस्कार अल्लाह को" या "नमस्कार रब को" या "नमस्कार मालिक को" कह कर जवाब दें इसी तरह नमस्ते का भी जवाब दें।

प्रश्न: अपने से उम्र में, इल्म में और मनसब (पद) में ऊँचे हिन्दू भाईयों से मुलाकात के वक्त हम सलाम की जगह पहल करने में क्या कहें क्या नमस्कार कह सकते हैं?

उत्तर: गैरुल्लाह को नमस्कार कहना नाजाइज है इस लिए किसी मोहतरम हिन्दू भाई को आदाब अर्ज़ कहें अल्लाह को नमस्कार या रब को नमस्कार या मालिक को नमस्कार कहें, जय हिन्द भी कह सकते हैं मगर सिर्फ नमस्कार या नमस्ते या प्रणाम हरगिज न कहें।

प्रश्न: क्या बड़े जानवर (पड़वा) की कुर्बानी में 6 नामों के साथ सातवें नाम में जमीअ़ (समस्त) सहाबा का नाम ले सकते हैं?

उत्तर: अगर छोटा जानवर बकरे वगैरा की कुर्बानी सवाब पहुंचाने के लिए जमीअ़ सहाबा की तरफ से की जाए तो दुरुस्त है लेकिन बड़े जानवर पड़वा वगैरा की कुर्बानी में सातवें नाम की जगह जमीअ़ सहाबा को नाम जद करना दुरुस्त नहीं, सातवें नाम में सिर्फ एक सहाबी का नाम लेना चाहिए।

प्रश्न: एक शख्स कहता है कि बेशक अल्लाह मसजूद (जिस को सज्दा किया जाए) है लेकिन चूंकि काबे की तरफ रुख कर के सज्दा किया जाता है इसलिए काबे को भी मसजूद कह सकते हैं क्या यह उन की बात दुरुस्त है?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

उत्तर: मसजूद सिर्फ अल्लाह तआला है, काबा जिहते सज्दा (सज्दे की दिशा) है काबे को मसजूद कहना या मानना शिर्क है, मसजूद रब्बे काबा है काबा नहीं।

प्रश्न: काबे से दुआ मांगना कैसा है?

उत्तर: काबे से दुआ मांगना शिर्क है, दुआ रब्बे काबा (अल्लाह) से मांगी जाएगी, इबादत रब्बे काबा की की जाती है, काबे की नहीं।

प्रश्न: हम लोग तक्बीरे तशरीक के शुरु में अल्लाहु अकबर दो बार कहते हैं कुछ लोग तीन बार कहते हैं सही क्या है?

उत्तर: हनफी उलमा के नजदीक तक्बीरे तशरीक के शुरु में अल्लाहु अकबर दो बार कहना खुलफाए राशदीन और अब्दुल्लाह बिन मसऊद से साबित है, शाफई उलमा, मालकी उलमा और अहले हदीस तीन बार अल्लाहु अकबर कहते हैं दोनों को

ठीक जानना चाहिए और इख्तिलाफ़ न करना चाहिए।

प्रश्नः जुमे की नमाज में इमाम ने सुरतुल फातिहा के बाद सू–रए–जिलजाल पढ़ी और आखिर की दोनों आयतों को आगे पीछे कर दिया और यूं पढ़ा "फमंय्यअ़मल मिस्क़ाल ज़र्रतिन शरंय्यरह व मंय्यअ़मल मिस्क़ाल जर्रतिन खैरंय्यरह"। तो नमाज़ हो गई या नहीं।

उत्तरः इस सूरत में नमाज़ हो जायेगी और नमाज़ में कोई खराबी न आएगी।

प्रश्नः चार रकअ़त वाली फर्ज नमाज़ में अगर आखिर की दोनों रकअतों में भूले से सू–रए–फातिहा के साथ कोई और सूरत मिला दी तो नमाज़ हो जाएगी या नहीं?

उत्तरः पूछी गई सूरत में नमाज़ हो जाएगी और सज–दए–सह्व न करना पड़ेगा।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

बनाया अब अगर तुम्हारे सत्तर मारे गए तो दुखी क्यों होते हो जब कि यह भी तुम्हारी ग़लती से हुआ, पैग़म्बर का आदेश न माना और पहाड़ी से हट आए और बद्र के क़ैदियों को मुक्तिधन (फिद्या) ले कर छोड़ दिया जब कि अल्लाह का आदेश यह था कि अगर क़ैदियों को मुक्ति धन ले कर छोड़ा गया तो अगले साल इतने ही तुम में मारे जाएंगे तो यह सब तुमने खुद ही किया।

7. यह मुनाफिक (कपटियों) की बात है, इसका मतलब तो यह मालूम नहीं होता कि हम जंग के तरीक़ों से अवगत होते तो हम शरीक होते, वे जंग के तरीकों को खूब ज़ानते थे बल्कि इसका मतलब यह मालूम होता है कि अगर जंग हामारे बताए हुए नियमों और मुनासिब स्थान और उचित अवसर पर होती तो हम ज़रूर चलते, अतः हीले–बहाने करके चले गए, और दिल में यह था कि मुसलमान पराजित हों तो वे खुश हों।

8. शहीदों को मरने के बाद एक खास जीवन प्राप्त होता है जो अन्य मुर्दों को नहीं होता, वे खाने पीने और हर्ष व उल्लास में रहते हैं, अल्लाह के पुरस्कार पर खुशियां मनाते हैं और उन लोगों पर भी खुश होते हैं जिन को वे दुन्या में अपने पीछे जिहाद में और अन्य भले कामों में छोड़ कर आए हैं।

9. उहद युद्ध से वापस हुए काफिरों के सेनाध्यक्ष अबू सुफियान को ख़्याल आया कि दोबारा हमला करके मुसलमानों को समाप्त कर देना चाहिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पता चला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि जो लोग लड़ाई में मौजूद थे वे दुश्मनों का पीछा करने के लिए तैयार हो जाएं, सख़्त थकान और चोटों से चूर होने के बावजूद मुसलमानों ने "हमराउल असद" स्थान तक पीछा किया, उस की ऐसी धाक बैठी की दुश्मन हमले का इरादा छोड़ कर मक्के की ओर भागे।

10. मक्का पहुंच कर अबू सुफियान ने फिर खबर उड़ाई की हम लोग मदीने पर एक बड़ी सेना के साथ हमले की तैयारी कर रहे हैं, मुसलमानों को खबर मिली तो उनके ईमान में और वृद्धि हुई और उन्हों ने कहा "हसबुनल्लाहु व नेअ़मल वकील"

❖❖❖

दादा पोते —इदारा

दादा की उम्र 75 वर्ष और पोते की उम्र 25 वर्ष, पोता तीसरे पहर बाज़ार गया, वहां से घर की ज़रूरत का सामान खरीद कर लाया, एक झोले में भिण्डी भी लाया, और दादा के पलंग के करीब एक खूंटी पर उसे टांग दिया, दादा ने पोते से पूछा, बेटे इस में क्या है, पोते ने जवाब दिया, दादा भिण्डी है शाम को भिण्डी की सब्ज़ी पकेगी, पोता अपने काम में लग गया, थोड़ी देर के बाद दादा के पास से गुज़रा तो दादा ने फिर पूछा बेटे झोले में क्या है? पोते ने जवाब दिया बता तो दिया कि झोले में भिण्डी है, दादा ने कहा अच्छा, अच्छा, फिर पोता किसी काम में लग गया और थोड़ी देर के बाद फिर दादा के पास से गुज़रा तो दादा ने फिर पूछा, बेटे झोले में क्या है? इस बार पोते को बुरा लग गया, पोते ने गुस्से में कहा कि दो बार बता चुका हूं कि झोले में भिण्डी है, आप को क्या हो गया है? आप कितनी बार पूछेंगे, दादा खामोश हो गये और उनकी आँखों से आँसू टपकने लगे, उसी वक़्त वहां दादा की पोती आ गई पोती ने आँसू देखे तो पूछने लगी दादा आप को क्या हुआ क्यों रो रहे हैं क्या भाई जान ने कुछ सख्त बात कही है? अपने भाई से मुखातब हो कर कहा, भाई जान आपने दादा को क्या कह दिया वह रो रहे हैं, पोते ने दादा से कहा दादा हमने आपको क्या कह दिया आप क्यों रोने लगे? दादा ने कहा बेटे तुमने कुछ बुरा तो नहीं कहा लेकिन मुझे एक पुरानी बात याद आ गई और मेरी आंखों से आंसू गिरने लगे। पोते ने कहा दादा मेरी बात से आपको तक्लीफ पहुंची हो तो उसे मुआफ कर दीजिए और आपको जो पुरानी बात याद आई और उससे आपके आंसू गिरने लगे वह बात हम लोगों को भी बताइये। दादा ने कहा बेटे तुम भी सुनो और तुम्हारी बहन भी सुने इतने में पोते की मां भी आ गई और दादा ने कहा, बेटे जब तुम दो साल के थे तो बोलने लगे थे, एक दिन तुम हमारी गोद में बैठे हुए थे, सामने मुंडेर पर एक कौवा बैठा हुआ था, तुम ने मुझ से पूछा दादा वह क्या है? मैं ने कहा कौवा, फिर तुमने पूछा दादा वह क्या है, मैंने कहा कौवा, मगर तुम ने फिर पूछा दादा वह क्या है मैं ने कहा कौवा, वह कौवा भी वहां कुछ खाने को पा गया था और घूम घूम कर उसी मुंडेर पर आ बैठता, इधर तुम्हारा पूछना जारी था, दादा वह क्या है? मैं जवाब देता कौवा, मेरा गुमान है तुम ने पच्चीस बार पूछा होगा और मैं ने जवाब दिया, किसी बार मेरे जवाब में नागवारी न थी बल्कि हर जवाब में मिठास घुली हुई थी, मगर आज तुम ने मेरे तीसरे बार पूछने पर नागवारी ज़ाहिर की, मैं जान रहा था कि झोले में भिण्डी है, मगर मुझे तुम्हारा वह पच्चीस बार का पूछना याद आ गया था इस लिए मैं इम्तिहानन पूछ रहा था ,और तीसरी बार में तुम्हारी नागवारी पर मेरे आंसू आ गये।

पोता दादा से लिपट गया और उसके भी आंसू गिरने लगे, पोते ने कहा दादा मुझे मुआफ कर दीजिए, आइन्दा ऐसी भूल नहीं करूंगा।

❖❖❖

जनवरी छब्बीस है

यह जनवरी छब्बीस है - कृपा पे आज ईश है
यह दिन है संविधान का - खुशियों का राष्ट्र गान का
यह दिन है लोक तंत्र का - कृतज्ञता के मंत्र का
भारत का संविधान यह - दस्तूर है महान यह
यह इस तरह लिखा गया - वंचित कोई नहीं रहा
छोटा कोई हो या बड़ा - हक़ सब को है दिया गया
मज़दूर हो किसान हो - छोटी बड़ी दुकान हो
अधिकारी कर्मचारी हो - हो पुरुष या कि नारी हो
हक़ सब का है लिखा गया - हक़ सब को है दिया गया
हिन्दू हो कि मुस्लिम हो - बौधी हो कि जैनी हो
सिख हो कि ईसाई हो - हो पारसी, बहाई हो
हर धर्म का सम्मान है - मालिक का यह वरदान है
सांसद हो कि विधायक हो - लोक प्रिय नायक हो
मंत्री हो कि महा मंत्री - देश का हो राष्ट्र पति
पाबन्द सब विधान के - भारत के संविधान के
भाषाएं अंगिनत यहां - और भिन्न भिन्न की बोलियां
सब का यहां अधिकार है - देश को सब से प्यार है
हिन्दी राष्ट्र की भाषा है - बहुत सरल यह भाषा है
जय हो बाबा साहिब की - प्रिय अम्बेडकर नायक की
रचा उन्होंने संविधान - बड़ा है उन का योगदान
प्रण करें हम चलेंगे उस पर - शासन भी हम करेंगे उस पर

(एक लेख से गृहीत)

मानवता का संदेश

—हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0

नोटः यह एक प्रवचन का अन्तिम भाग है, आरंभिक भाग सितम्बर के अंक में "बात प्रेम और भाई चारे की" शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है।

नफ़रत और भय की खेतीः-

जिस तरह से किसान बीज डालता है तो खेती उगती है, फिर काटता हैं। ऐसे ही नफ़रत और भय की भी खेती है। नफ़रत और भय की खेती सबसे अधिक फलने–फूलने वाली है। नफ़रत के बीज आप डाल दीजिए, भय के बीज आप बिखेर दीजिए। इसके बाद फिर वह ऐसी फसल, इतनी पैदावार होगी कि न आपके गेहूं की इतनी पैदावार होती है, न जौ की। इसी प्रकार न ज्वार की इतनी पैदावार होती है। अपितु किसी की भी नहीं होती है। आज हमारे देश में यही खेती बोई जा रही है। नफ़रत और ख़ौफ़ की। एक कम्यूनिटी, दूसरी कम्यूनिटी से डरती है और अपने डर को छिपाती भी है। मैं आप को बता दूं, यह भी एक काम्प्लेक्स है। कभी–कभी एक इन्सान को देखते हैं तो मालूम होता है कि बड़ा शेर मर्द है, बहादुर है, लेकिन अन्दर भय बैठा हुआ है। मैं साफ़ कहता हूं कि मुसलमान हिन्दू भाई से डरता है और हिन्दू भाई मुसलमान से डरता है। गुस्सा भी उसके अन्दर है और डरता भी है, साथ ही साथ डर को छिपाता भी है। वह डर को ज़ाहिर नहीं करता कि लोग उसे कायर कहेंगे। ज़ाहिर तो नहीं करता, लेकिन दिल में डर बैठा हुआ है, आप दिल चीर कर के देखिए। एक–एक शहरी के दिल में डर बैठा हुआ है। हिन्दू मुसलमान से डर रहा है। साफ सुन लीजिए। मुझ से डरने की कोई बात नहीं है। हिन्दू मुसलमान से क्यों डर रहा है? इसलिए कि उसने उसको पहचाना नहीं। वह नहीं जानता कि उसके अन्दर प्रेम की कितनी भावना है खुदा ने उस के अन्दर कितनी महब्बत रखी है।

अगर इस महब्बत को अपनी हालत पर छोड़ दिया जाये और महब्बत करने का उसको मौक़ा दिया जाये तो ऐसी महब्बत करेगा जैसा कि कोई माँ औलाद से करती है। लेकिन जब हिन्दू मुसलमान एक–दूसरे से परिचित ही नहीं हैं तो महब्बत का रिश्ता कैसे हो सकता है।

हमारा इतिहास, हमारा लिट्रेचर, हमारी सोसायटी सब महब्बत के गीतों से भरी हुई हैं, लेकिन प्रेम की भावना को अंकुरित तो होने दिया जाये। उस पर तो ऐसा ढक्कन लगाया गया है और उसको सील कर दिया गया है कि महब्बत निकलने नहीं पाती सुराख़ जो किया जाता है वह नफ़रत के निकलने के लिए किया जाता है। महब्बत के सुराख़ बन्द और नफ़रत के सुराख़ सब खुले हुए हैं। नफ़रत का मौक़ा हर जगह

है और वही आदमी पापूलर होता है, लीडर बनता है, चुनाव जीतता है और फिर वही आदमी गद्दी पर आता है, जो नफ़रत करना सिखाता है, जो डराता है और जो महब्बत की बात करता है, उसको लोग कहते हैं कि आप अपने घर बैठिए। आपका काम नहीं है। आप की हमें ज़रूरत नहीं है। आप अपने यह गीत वहीं अलापियेगा। मैं आप से कहता हूं कि हमारी, आपकी, सबकी कमज़ोरी यही है। अभी एक आदमी आ जाए और जोशीली तक़रीरें करे और कहे, देखो! भाई मुसलमान! देखो यह जुल्म हो रहा है इस देश में और यह हो रहा है, वह हो रहा है, तुम्हारे हिन्दू भाई तो यह करना चाहते हैं और तुम्हें इज़्ज़त के साथ रहने देना नहीं चाहते तो मैं यहां चिल्लाता रहूंगा। मेरे सब साथी मुँह देखते रहेंगे और सारा मजमा उधर ही चला जायेगा। फिर उसी के ज़िन्दाबाद के नारे लगने लगेंगे। ऐसे ही कोई आ जाये और हिन्दू भाईयों के जज़बात से खेलने लगे और भड़काने लगे कि पाकिस्तान ने यह तैयारियां की हैं तो लोग हमारे अध्यक्ष जी को भी छोड़ देंगे और कोई बड़े से बड़ा लीडर आ जाये, उस की बात भी न सुनेंगे। यह कमज़ोरी इसलिए है कि उन लोगों को मौक़ा दिया गया जो इन्सान की कमज़ोरी से फायदा उठाना चाहते हैं। उन्होंने यह समझ लिया है कि इन्सान से काम लेने का आसान रास्ता, तरीक़ा यह है कि उसके जज़बात को भड़काओ। उसमें नफ़रत और जोश पैदा करो और फिर अपना काम कर लो और जो महब्बत की बात करते हैं, गम खाने की बात करते हैं अपने को कन्ट्रोल में रखने की बात करते हैं, उनकी बात सुनने वाले थोड़े से हैं। चन्द आदमी बैठे रहेंगे। उनमें भी किसी को नींद आने लगेगी, कोई सो जायेगा। यह हामरे देश के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है।

अगर यह धारा इसी तरह बहता रहा तो यह मजमा भी न हो सकेगा जो इस समय हुआ है दस बीस साल के बाद भी आप न कर सकेंगे। अभी खुदा ने मौक़ा दिया है कुछ मेहनत कर लीजिए और मिल कर रहना सीखिए और सब मिल कर इस देश को बनाने की कोशिश कीजिए। इस देश में अल्लाह ने जो नेमतें पैदा की हैं, उनकी क़दर कीजिए। इस देश की एक–एक चीज़ से महब्बत कीजिए और आदमी की तरह रहना सीखिए तो ज़िन्दगी का मज़ा आयेगा। ज़िन्दगी बे पैसे के भी कितनी मज़ेदार है। थोड़े खाने के साथ भी कितनी मज़ेदार है। जिस परिवार में महब्बत है वह ख़ानदान, चाहे सूखी रोटी खाये लेकिन कैसे चैन की बांसुरी बजाते हैं, उस ख़ानदान के लोग कैसी मीठी नींद सोते हैं, कैसे सुखी होते हैं और जिस ख़ानदान में छोटा हो या बड़ा–नफ़रत है, मुकद्दमाबाज़ी है, भाई–भाई को नहीं देख सकता यहां हालत यह है कि रात को नींद नहीं आती कि मालूम नहीं कौन गला घोंट दे और कौन घर में घुस जाये और क्या कर दे, कौन

हमारी इज़्ज़त ख़ाक में मिला दे। हमारी बेइज़्ज़ती करा दे। ख़ानदान में सब कुछ है कमाने वाले बहुत हैं, बैंक बैलेन्स बहुत, घर में टी0वी0 भी है, फ्रिज भी है, ऐश व आराम का सामान भी है लेकिन ज़िन्दगी में कोई मज़ा नहीं। आराम से चार आदमी बैठ कर बातें करें, इस को तरसते हैं और जहां कुछ नहीं है न रेडियो न टी0वी0 है न अच्छे–अच्छे बर्तन हैं न फ़र्नीचर है न डिकोरेशन का कोई सामान है मगर महब्बत है। भाई– भाई से महब्बत करता है। एक माँ है। उसके चार बच्चे हैं, दो बच्चियां हैं सब आपस में मिल–जुल कर रह रहे हैं और एक दूसरे पर जान देते हैं और दूसरे चचेरे भाई वगैरह कभी जो आते हैं सब अदब से सलाम करते हैं। दिल बाग़–बाग़ हो जाता है, बड़ी–बूढ़ी औरतें प्यार करती हैं, बड़े–बूढ़े सर पर हाथ रखते हैं। उस घर में मालूम होता है कि जीने का मज़ा और वहां की रूखी–सूखी रोटी में जो मज़ा है, दूसरी जगह के हलवे पराठों में वह मज़ा नहीं।

तो मेरे भाइयो! महब्बत के साथ जीना सीखिए। आपको मालूम तो हो कि महब्बत के साथ जीने में ज़िन्दगी का मज़ा है। यह भी कोई ज़िन्दगी है कि आदमी आदमी से डर रहा है। मुहल्ले वाला मुहल्ले वाले से डर रहा है। एक ऑफ़िस में काम करने वाले को उसी ऑफिस में जो उसके साथ काम करता है मेज़ से मेज़ लगी हुई है उस पर भरोसा नहीं कि किस समय उसके खिलाफ़ फ़ाइल दाख़िल कर दे, शिकायत कर दे, रिश्वत खुद लेवे और उसको पकड़वा दे। आज यह हालत हो रही है दफ़्तरों की, यह हालत हो रही है मुहल्लों की, यह हालत हो रही है संस्थाओं की, जो आदमी बनाने का काम करती है। क्षमा करें प्रिंसिपल साहब, यहां का हाल अच्छा होगा। लेकिन हम शहरों का हाल जानते हैं। वहां की यूनिवर्सिटीज और कॉलेजेज़ में कहीं भी किसी को भरोसा नहीं है। विश्वास तो बिल्कुल समाप्त हो गया है। किस पर भरोसा करे और किस से उम्मीद रखे। विद्यार्थी अध्यापक का सम्मान नहीं करते। अदब नहीं करते। अध्यापक छात्रों से प्रेम नहीं करते। दोनों एक दूसरे के विरोधी बने हुए हैं। एक दूसरे को उखाड़ना और बरबाद करना चाहते हैं।

मेरे भाइयो! लम्बी तक़रीर की ज़रूरत नहीं। आप आदमीयत सीखिये। हमें आदमीयत की तालीम (शिक्षा) सबसे पहले हमारे पैग़म्बरों ने दी जो खुदा की तरफ से इसी काम के लिए भेजे गये थे। फिर बाद में जो उनके उत्तराधिकारी थे और उन की तरह काम करने वाले थे, जो बुजुर्ग थे, अल्लाह वाले लोग थे। एक किस्सा सुनिए कि एक बुजुर्ग थे, उनके पास कोई बहुत अच्छी बनी हुई कैंची भेंट देने लाये। उन्होंने कहा कि हमें कैंची की कोई ज़रूरत नहीं। हमें तो सूई दो मैं फाड़ने का काम नहीं करता मैं तो दिलों को सीने का काम करता हूं। यह कैसी सीधी बात है। सीधी सादी कहानी है कोई फ़िलास्फ़ी नहीं है। मगर कैसी सच्ची बात है आज इस देश को

सूई की ज़रूरत है। कैंची की कोई ज़रूरत नही। कैंची घर पर चल चुकी। गांव गांव चल चुकी। मुहल्ले मुहल्ले चल चुकी। अब महब्बत की प्रेम की सूई की ज़रूरत है कि आदमी आदमी को पहचानें महब्बत करना सीखे। मदद करना सीखे। और ऐसी बातों की हमारे देश में कमी नहीं। आज भी ऐसे लोग हैं जो इन्सानों से इन्सानियत के नाते से प्रेम करते हैं।

एक बार हम लोग उतरौला से आ रहे थे। हमारे डॉक्टर इश्तियाक़ सोहब स्वयं गाड़ी ड्राइव कर रहे थे। हम अपने दोस्त की शादी में गये थे वहां से चले तो अचानक, होने वाली बात कि एक इक्का एक दम से आ कर सामने खड़ा हो गया, इक्के में एक जवान औरत थी जो शायद विदा हो कर आ रही थी या ससुराल जा रही थी। घूँघट काढ़े हुए वह सामने आ गई। डॉक्टर साहब ने बहुत बचाया लेकिन जरा सा धक्का लगा और वह गिर गई। बेहोश हो गई। हमारे डॉक्टर साहब तो डॉक्टर हैं ही वह अपने साथ दवायें भी रखते हैं। दवा दी थोड़ी देर के बाद उसको होश आ गया, उस औरत को कोई विशेष चोट भी नहीं लगी थी, वह तो भय से अचेत हो गई थी, परन्तु गांव वाले लाठियां ले ले कर पहुंच गये वह तो भला हो एक मास्टर जी का यद्यपि वह हिन्दू थे परन्तु बड़े भले आदमी थे वह आगे आये और हम लोगों को अपने दरवाजे ले गये, पलंग पर बैठाया और गांव वालों को समझाने लगे, गांव वालों ने कहा, यह मुसलमान हैं, मास्टर जी ने कहा, मुसलमान हैं तो क्या हुआ? इन्सान तो हैं, भले लोग हैं, जान बूझ कर धक्का नहीं दिया, धक्का लग गया फिर कोई विशेष चोट भी नहीं है मास्टर जी ने गांव वालों को समझा बुझा कर वापस किया, लेकिन बात थाने तक पहुंच चुकी थी, मास्टर जी हम लोगों को ले कर थाने गये और वहां उस औरत की कुछ मदद करा के संधि करा दी, कितने भले थे मास्टर जी।

उन से फिर कभी मुलाक़ात नहीं हुई। यह देश इसी से क़ायम है अब तक और इसी से क़ायम रहेगा। हम यह चाहते हैं कि इन्सानियत का यह सन्देश गाँव–गाँव पहुंचायें और हमारे हिन्दू भाई और मुसलमान भाई इस बात को सीखें।

पुरानी मिसाल है कि :-

नक्क़ारख़ानों में तूती की आवाज़। इस नक्क़ारखाने में हम जैसे तूती की आवाज़ कौन सुनेगा। जहां इतने अख़बार निकलते हैं। इतने जलसे होते हैं। वहां हम एक तहसील के अपने इन कुछ भाईयों के सामने जिनकी संख्या कुछ सौ से अधिक न होगी। इनके सामने अपनी बात कह कर चले जायेंगे। क्या इस से कोई बड़ा इन्क़िलाब आ जायेगा। मगर नहीं दुन्या में सब काम इसी तरह से हो रहे हैं। अगर करने वाले शुरु में यह देखते और यह सोचते कि कितने आदमी सुनने वाले हैं कितने आदमी काम करने वाले हैं तो दुन्या में एक काम भी नहीं होता। यह देश भी आज़ाद न होता। इस देश को आज़ाद कराने के लिए जिन्होंने कोशिश की। गांधी जी ने कोशिश की, अली

बिरादरान ने कोशिश की और मोती लाल जी ने कोशिश की, उस समय क्या उनके पास जमघटा था, क्या उनकी बातें सुनने के लिए एक एक लाख और दो–दो लाख आदमी जमा हुए थे? यह तो बहुत बाद में हुआ। इसी तरह एक बीज कितना रंग लाता है। अगर किसान यह सोचे कि यह मुट्ठी भर बीज क्या कर लेंगे? इनको ज़मीन में डाल कर बेकार समय गंवाना है तो भूखों मर जायें।

आप से हमें यही कहना है कि यहां ऐसा माहौल बनाइये। महब्बत और विश्वास का माहौल कि एक दूसरे पर एतिबार और भरोसा हो। हर आदमी दूसरे आदमी का आईना (दर्पण) है। हमारी सोसाइटी आइडियल होनी चाहिए कि कोई कहे कि अमुक व्यक्ति ने चोरी की तो यह सोंचे कि क्या हम चोरी नहीं कर सकते हैं। यह बात ग़लत होगी हम चोरी नहीं कर सकते तो वह हमारा भाई भी चोरी नहीं कर सकता हमारा कुर्आन ऐसी ही सोसाइटी बनाना चाहता है।

यह भरोसा और यह कानफीडेंस होना चाहिए कि आदमी सुनते ही न मान ले। आज तो यह है कि अगर किसी के खिलाफ कोई बात कही, सुनते ही मान ली जायेगी और अगर अच्छी बात कही तो हज़ार जिरह होंगी। साहब, आप ने देखा क्या आप ने आंख से देखा था? क्या आप ने आज़माया था? क्या आप उस समय जाग रहे थे? दस बातें कहेंगे। कोई अच्छी बात कह के तो देखे और अगर कोई अभी आ कर यूं ही कह दे कि यह मोलवी साहब आप इन्हें पहचानते हैं? अरे यह मोलवी बड़े तेज़ हैं। मालूम नहीं क्या यह करते हैं। बस पन्द्रह–बीस आदमियों को यक़ीन आ जायेगा।

भाई! आप दुकान पर जाते हैं। सौदा लाते हैं। सारा काम दुन्या में भरोसे पर चल रहा है। आप डॉक्टर के पास जाते हैं। इस भरोसे पर जाते हैं कि यह अपने फ़न से वाक़िफ हैं। यह हमदर्दी करते हैं। यह अच्छी दवा देंगे। विद्यार्थी अध्यापक से पढ़ता है तो वह भी इसी भरोसे पर कि आप हम से ज़ियादा जानते हैं। आप हमें ज्ञान दे सकते हैं। तो जो चीज़ एक दूसरे को आपस में बांधे हुए है, वह है विश्वास और भरोसा। इसको आप काट दीजिए तो सब अलग–अलग गिर जायेंगे। इकाइयां सब बिखर जायेंगी। दुन्या में इन इकाइयों को जो चीज़ मिलाये हुए है और उन को एक पुर्ज़ा बनाये हुए है, वह है विश्वास और भरोसा और अच्छी आशा। इसको आप काट दीजिए, सब बिखर कर रह जायेगा। एक समाज भी नहीं चल सकेगा। एक गांव नहीं चल सकेगा।

बस यही हमें कहना है आप से और पूरे हिन्दुस्तान से। यही हमारे इस सफ़र का मक़सद है और यही पयामे इन्सानियत का पैग़ाम (संदेश) है। आप सब पढ़े–लिखे लोग हैं, ज़ियादा लम्बी तक़रीर की ज़रूरत नहीं है।

प्रेम और विश्वास का वातावरण बनाइये ताकि भारत स्वर्ग का एक नमूना बने।

भारतीय राजा चैरामन पैरूमल की हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से मुलाकात और कूडन जल्लूर में भारत की पहली चैरामिन मस्जिद का निर्माण

—इं0 जवेद इकबाल

आमतौर पर समझा जाता है कि भारतीय उप महाद्वीप में मस्जिदों का निर्माण सन् 1196 ई0 से शुरु हुआ। और सब से पहले सुल्तान कुतबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली की कुव्वतुल ईमान मस्जिद बनवाई। तीन साल बाद 1199 ई0 में अजमेर की झोपड़ मस्जिद का ज़िक्र इतिहास में मिलता है। लेकिन हक़ीकत यह है कि केरल प्रदेश के कूडनजल्लूर के स्थान पर भारत की पहली मस्जिद का मिर्माण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी मालिक बिन दीनार के द्वारा वर्ष 629 ई0 में कराया गया था।

केरल प्रदेश का राजा चैरामन पैरूमल एक इंसाफ़ पसंद इंसान दोस्त हमदर्द शासक था। उस की राजधानी कूडनजल्लूर में ही थी जो कि उस ज़माने से ही प्रसिद्ध बन्दरगाह है। अरब देशों से व्यापारिक काफ़लों का यहां आना जाना एक आम बात थी। यह व्यापारी अकसर सीलोन (वर्तमान श्री लंका) आदम पर्वत के दर्शन के लिए जाया करते थे। चैरामन पैरूमल का शासक काल वही था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत का ज़माना था।

एक रात की बात है, राजा अपने महल की छत पर टहल रहा था, सम्भवतः उसे नींद नहीं आ रही थी। अचानक उसने देखा की चांद के दो टुकड़े थे एक पूर्व की ओर से और दूसरा पश्चिम की ओर से आ कर मिले और फिर पूरा चांद पश्चिम की ओर डूब (अस्त) गया। राजा कुछ समझ न सका वह गहरी चिन्ता में डूब गया। दूसरे दिन उस ने विद्वानों की एक सभा बुलाई। पूरी घटना उन्हें कह सुनाई और धर्मग्रंथों के आधार पर इस घटना का रहस्य जानना चाहा। किसी एक ज्ञानी को अपने धर्मग्रंथ की एक भविष्य वाणी याद आई और उसने बताया कि अरब देश में एक ईशदूत के आने का संकेत हमारे ग्रंथों में मिलता है जो इस प्रकार का चमत्कार अपनी क़ौम के लोगों को दिखायेगा। हो सकता है कि वह ईश दूत वहां आ चुका हो और उसने यह चमत्कार दिखाया हो इस सम्बंनध में आप को जांच कराने की ज़रूरत है।

राजा का शौक़ बढ़ गया, उसने अरब क्षेत्र से आने वाले क़ाफ़लों पर विशेष नज़र रखने के आदेश दे दिये। कुछ दिन बाद एक क़ाफ़िला कूडन जल्लूर के तट पर रुका, ये लोग आदम अलैहिस्सलाम के पैरों के निशान देखने के उद्देश्य से सीलौन जा रहे थे। कुछ लोग उस क़ाफ़िले में चांद के विभाजन की घटना से वाक़िफ़ थे। राजा को जब ख़बर हुई तो उसने उन लोगों को सम्मान सहित दरबार में बुलाया, अपना मेहमान बनाया। फिर उन के सामने अपनी आंखों देखी यह घटना बयान की और पूछा कि यदि वे इस संबंध में कुछ जानते हों तो मेरी जिज्ञासा का निदान करें।

तब उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विषय में पूरी जानकारी देते हुए बताया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का नगर वासियों के सामने स्वयं को खुदा का रसूल सिद्ध करने के लिए अपनी उंगली के इशारे से चांद के दो टुकड़े कर दिए थे, एक भाग हिरा पर्वत के एक ओर दूसरा दूसरी ओर चला गया था, और फिर दोनों टुकड़े आ कर मिल गए थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया था कि यह चमत्कार ख़ुदा के आदेश से हुआ है इस में मेरी अपनी कोई शक्ति शामिल नहीं है।

राजा की जिज्ञासा और बढ़ी, उस ने तिथि और समय पूछा, काफ़िले वालों ने तिथि और समय बताया जो वही था जब राजा ने यह चमत्कार देखा था। अतः राजा चैरामन पैरूमल, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलने के लिए बेचैन हो गया। तय यह पाया कि जब ये क़ाफ़िले वाले सीलौन से वापस लौटेंगे तो राजा उन के साथ मक्का नगर जायेगा। और फिर वह अपना राज पाट अपने भाई को सौंप कर क़ाफ़ले के साथ अरब की ओर चल पड़ा।

इस तरह कोडिन जल्लूर के राजा की मुलाक़ात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने राजा को गले लगा लिया और उसे तौहीद व आख़िरत की बातें समझाई। राजा पहले ही अपने दरबार के ज्ञानियों से अपनी धार्मिक पुस्तकों में ऐसे सन्देष्टा के आने की भविष्य वाणी सुन चुका था, वह चांद का चमत्कार स्वयं अपनी आंखों से देख कर बहुत प्रभावित था। अतः तुरन्त ईमान ले आया। उस ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहने का निर्णय ले लिया। और इस्लामी नाम ताजुद्दीन रखा। इस प्रकार दक्षिणी भारत के एक राजा को भी सहाबी होने का गौरव प्राप्त हुआ। लगभग तीन महीने वहां रह कर दीन सीखने के बाद उसे अपने वतन के लोगों को इस्लामी शिक्षा से अवज्ञत कराने का विचार आया। कई सहाबा किराम के साथ ताजुद्दीन का क़ाफ़िला मालावार की ओर चल पड़ा। मगर रास्ते में राजा अस्वस्थ हो गया। बीमारी ने गम्भीर रूप धारण कर लिया। जब उसे बचने की आशा न रही तो मलियाली भाषा में एक पत्र क़ाफ़िले के सरदार शरीफ बिन मलिक को इस निर्देश के साथ दिया कि भाई को जा कर पत्र दें, मगर राजा की मृत्यु की सूचना न दें। पत्र में काफ़िले वालों की हर प्रकार की सहायता करने के निर्देश उस ने अपने भाई को दिये थे इस प्रकार मालाबार के क्षेत्र में इस्लाम का सन्देश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन काल में ही पहुंच गया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक सब से पहले इन काफ़िले वालों ने एक मस्जिद बनाई जिस का नाम राजा के ही नाम पर चैरामिन मस्जिद रखा गया। यह भारत की निश्चित रूप से सब से पहली मस्जिद है इस की लम्बाई 61 मीटर, चौड़ाई 24 मीटर है। वर्तमान में इस पुरानी मस्जिद को उसी तरह सुरक्षित रखते हुए पूर्व दिशा में नया निर्माण भी कराया गया है। वर्ष 2016 में

शेष पृष्ठ .....34...पर..

अल्पसंख्यकों के प्रति जिम्मेदारी

—मौलाना नंजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

सामान्यतः यह देखा गया है कि अमुक देश का शासन अल्पसंख्कों के प्रति भेदभाव रखता है और आये दिन इस पर अनेक देशों में हो—हल्ला भी मचता रहता है। लेकिन इस्लामी शासन में समानता का उच्च उदाहरण मिलता है। इस्लामी शासकों की दृष्टि में देश के समस्त नागरिक एक समान थे। उस में असमानता का तत्व तनिक भी नहीं पाया जाता था। आइये उसी से जुड़ी एक घटना सुनाता हूं।

एक बार मिस्र के एक ईसाई ने हज़रत अर्फा रज़ि0 नामक एक मुसलमान के सामने अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताखी की और उन के लिए गलत शब्दों का प्रयोग किया। हज़रत अर्फा रज़ि0 अपने प्रिय जगनायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में ऐसे शब्दों को सुन न सके और उसे एक तमांचा मार दिया।

उस ईसाई ने मिस्र के गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 के समक्ष उनकी शिकायत दर्ज कराई। हज़रत अर्फा रज़ि0 को तलब किया गया तो इस पर उनसे सफाई मांगी गई। हज़रत अर्फा रज़ि0 ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। इस गवर्नर ने उनसे अल्पसंख्यकों के प्रति नर्मी रखने की नसीहत की और उन्हें याद दिलाया कि हम मुसलमानों ने उन से उन की रक्षा का वचन लिया है।

इस पर हज़रत अर्फा रज़ि0 ने कहा कि आप की बात सही है, लेकिन एक मुसलमान के लिए प्यारे नबी का तिरस्कार असहनशील है। अतः उन्हें इस प्रकार किसी के दिल को ठेस पहुंचाने की आज्ञा नहीं दी गई है। हां! हमने इनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली है कि यदि कोई शत्रु उन पर आक्रमण करे तो हम उनकी रक्षा करें। उन पर ऐसा बोझ न डालें कि जिसको वह उठा न सकें। गिरजा घर में उन्हें अपने तरीके के मुताबिक पूजा करने का पूरा अधिकार है। यहां तक कि वह अपने उपासना घर में जिस प्रकार चाहें अपने विचार व्यक्त करें, हम उस में कदापि हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

एक दौर वह था और एक दौर ये है। अब अल्पसंख्यकों विशेषतः मुसलमानों के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया जाता है। भारत में भी आतंकवाद के नाम पर निर्दोष मुसलमान को जेलों में ठूंसा जाता है और तब तक नहीं छोड़ा जाता जब तक वह किसी काम के न रह जाएं।

पहले भारतीय मुसलमानों की दुर्दशा के लिए अशिक्षा को जिम्मेदार ठहराया जाता था। लेकिन जब मुस्लिम युवाओं ने उच्च शिक्षा ग्रहण करना शुरु किया तो उन्हें आतंकवाद के नाम पर जेलों का एक हिस्सा बना दिया गया। आज भी ये खेल खेला जा रहा है और उन्हें नारकीय जीवन जीने पर विवश किया जा रहा है।

शेष पृष्ठ .....38...पर..

दीने इस्लाम .....

इल्म हर वक़्त किसी के लिए मुमकिन नहीं। अल्लाह तआला को सिफ़ारिश कुबूल करने और बाअसर व बाइक्तेदार लोगों को राज़ी व खुश करने में दुन्या के बादशाहों पर क़यास नहीं करना चाहिए। ऐसी हर छोटी और बड़ी बात में खुदा ही की तरफ़ ध्यान देना चाहिए। दुन्या के बादशाहो की तरह कायनात के इन्तेज़ाम में दरबारियों से मदद लेना खुदा के शायानेशान नहीं हैं। किसी तरह का सज्दा सिवाय खुदा के किसी के लिए जायज़ नहीं। हज के मनासिक, आखरी दर्जे की ताज़ीम के मज़ाहिर और महब्बत व फनाईयत की तमाम बातें बैतुल्लाह के साथ खास हैं। सालेहीन और औलिया के साथ ज़ानवरों की तशख़ीस, उनका कुर्ब हासिल करना हराम है। आजज़ी व इन्किसारी के साथ ग़ायत दर्जे की ताज़ीम के जज़्बा से कुर्बानी करना सिर्फ़ अल्लाह का शिर्क है। जादूगरों, नजूमियों और ज्योतिषियों पर एतमाद करना कुफ़्र है।

नाम रखने में भी मुसलमानों को तौहीद के शेआर का इज़हार करना चाहिए। ग़लतफ़हमी पैदा करने वाले और जिस से मुशरिकाना एतक़ाद का इज़हार होता हो ऐसे अल्फ़ाज़ से बचना चाहिए। खुदा के अलावा किसी की क़सम खाना शिर्क है। अल्लाह के अलावा किसी के नाम नज़रें मानना हराम है। इसी तरह किसी ऐसे मकाम पर कुर्बानी करना जहां कोई बुत था या जाहिलियत का कोई जश्न मनाया जाता था नाजायज़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ताज़ीम में कमी व जियादती और नसारा के अपने नबी के बारे में गुलू व मुबालिग़ा की तक़लीद और औलिया व सालहीन की तस्वीरों और शबीहों की ताज़ीम करने से परहेज़ करना चाहिए। ◆◆

भारतीय राजा.....

जब भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सऊदी अरब गए थे तो उन्हों ने सोने के पत्तुर से बनी इस मस्जिद की आकृति शाह सलमान बिन अब्दुल अज़ीज़ को भेंट की थी।

इतिहास की पुस्तकों में इस वाकिये का उल्लेख संक्षिप्त रूप से मिलता है। अलबत्ता शैख़ ज़ैनुद्दीन की पुस्तक "तुहफ़तुल मुजाहिदीन" में इस का विस्तार पूर्वक बयान देखा जा सकता है। और आजकल तो नेट पर भी इस मस्जिद की नई–पुरानी फोटो और विवरण उलब्ध है।

❖❖❖

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो अर्थात हर हाल में अल्लाह को ध्यान में रखो और सच्ची पक्की बात कहो अल्लाह तुम्हारे कर्मो को संवार देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञा पालन करेगा वह निश्चय ही बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।

(सू-एए-अहजाबः70-71)

उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम

लाइके हम्द मोमिन मुहैमिन सलाम
अरहमुर्राहिमी तेरी रहमत है आम
तेरे प्यारे नबी पे हों लाखों सलाम
तेरे आख़िर नबी पे हों लाखों सलाम
खातिमुल अंबिया खातिमुल मुरसली
सैयदुल अंबिया पे हों लाखों सलाम
रहमते आलमी शाफिअे मुजनबी
शाहे दीने मुबी पे हों लाखों सलाम
जिस पे कुर्आन उतरा खुदा का कलाम
उस रसूले अमी पे हों लाखों सलाम
जिस की हर बात होती खुदा की वही
उस मुकर्रब नबी पे हों लाखों सलाम
जिस को मेराज का मुअजिजा था मिला
उस मुकर्रम नबी पे हों लाखों सलाम
जिस को रब ने दिये मुअजिजे बे शुमार
उस मुअज़्ज़म नबी पे हों लाखों सलाम
जिस के खुलफा अबू बक्रो फारूक हैं
उस नबीये महब्बत पे लाखों सलाम
जिस के खुलफा में उस्मां, अली और हसन
उस नबीये मुरूवत पे लाखों सलाम
मुझ गुनहगार के तो शफीअ हैं वही
उनपे लाखों दुरूद उनपे लाखों सलाम

उम्महातुल मोमिनीन का नाम	निकाह का सन्	वफ़ात का सन्	उम्र
1. हज़रत ख़दीजा रज़ि0	नबूवत के 15 साल पहले	10 नबवी	65
2. हज़रत सौदा रज़ि0	सन् 10 नबवी	खिलाफते फ़ारूकी के आख़िरी साल	
3. हज़रत आइशा रज़ि0	सन् 10 नबवी	58 हिजरी	63
4. हज़रत हफ़सा रज़ि0	शाबान 3 हिजरी	45 हिजरी	84
5. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0	शाबान 4 हिजरी	59,61,62 हिजरी	x
6. हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ि0	5 हिजरी	20 हिजरी	x
7. हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबी सुफ़यान रज़ि0	6 हिजरी	42,44 हिजरी	x
8. हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ि0	6 हिजरी	50 हिजरी	x
9. हज़रत मैमूना बिन्त हारिस हिलालिया	7 हिजरी	51 हिजरी	x
10. हज़रत सफ़ीया बिन्त हुई रज़ि0		50 हिजरी	x
11. हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुजैमा रज़ि0		4 हिजरी	x

दुआ (विनय)

—सम्पादक

ख़ुदाया तू अपनी महब्बत अता कर	ख़ुदाया नबी की महब्बत अता कर
इताअत हमेशा करूँ मैं नबी की	करम से तू अपने ये ताक़त अता कर
गुनाहों से या रब बचूँ मैं हमेशा	मुझे शिर्को बिदअत से नफरत अता कर
न खाऊँ कभी भी में लुक़्मा हराम	मुझे पाक रोज़ी की नेअमत अता कर
ग़रीबों यतीमों मुसीबत के मारों	मैं काम आऊँ उनके यह ख़िदमत अता कर
न तकलीफ मुझ से मिले याँ किसी को	मेरे हाथों लोगों को राहत अता कर
करूँ काम सारे मैं तेरी रिज़ा के	इलाही मुझे अपनी नुसरत अता कर
अबू बक्रो फ़ारूक़ो उस्मां अली की	इलाही तू उन की महब्बत अता कर
मैं इज़्ज़त करूं दिल से आले नबी की	महब्बत तू उनकी और उलफत अता कर
नबी की हैं अज़्वाज उम्मत की माएं	इलाही तू उन की इताअत अता कर
सहाबा नबी के सितारों के मानिन्द	चलूँ राह उन की ये क़ूवत अता कर
नमाजों में सुस्ती कभी न करूँ मैं	नमाजों से ऐसी तू रग़बत अता कर
मैं रमज़ान के रोजे रखूँ ख़ुदाया	मेरे दिल को रोज़ों की अज़मत अता कर
अगर माल अपने करम से मुझे दे	ज़कात उसकी देने पे क़ुदरत अता कर
अगर इस्तितआत हो रस्ते की मुझ को	तो तू मुझको हज की सआदत अता कर
हो क़ुर्आन से मेरा गहरा तअल्लुक़	शबो रोज़ उसकी तिलावत अता कर
गुनाहों से अपने मैं ताइब हूँ या रब	इनाबत को मेरी इजाबत अता कर
तेरे प्यारे नबी पे दुरूदो सलाम	पढ़ूँ मैं हमेशा ये आदत अता कर

कालिजों में मुस्लिम छात्रों की दीनी शिक्षा

—उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी बी0एस0सी0 छात्र

कालेजों में दीन (धर्म) की शिक्षा नहीं दी जाती न दी जा सकती है इसलिए कि हमारे देश की शासन व्यवस्था सेकूलर है परन्तु कोई मुसलमान बच्चा दीन की शिक्षा के बिना मुसलमान कैसे रह सकता है? इसी लिए मुसलमानों ने मुस्लिम बच्चों की दीनी शिक्षा के लिए दीनी मकतब खोल रखे हैं, मेरे गांव में भी "मदरसा सिद्दीक़िया इस्लामिया" नाम का एक मकतब है मैंने उसी मकतब में कुर्आन शरीफ़ नाज़रा ख़त्म किया और दीन की आवश्यक बातें सीखीं।

मेरे वालिद साहिब ने बताया कि दीन का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए अरबी भाषा पढ़ना पड़ती है फिर कुर्आन और हदीस को समझ कर दीन का ज्ञान प्राप्त करने में लम्बा समय लगता है जो न हर मुसलमान के लिए सम्भव है न आवश्यक अलबत्ता कुछ मुसलमानों के लिए अवश्य आवश्यक है कि वह दीन का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर के दीन को सुरक्षित रखें और फैलायें परन्तु सभी मुसलमानों के लिए दीन की आवश्यक बातें सीखना आवश्यक हैं मैंने भी दीन की आवश्यक बातें उसी मकतब से सीखी हैं।

मैंने "लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का अर्थ सीखा कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नही है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हैं उन पर अल्लाह की रहमत और सलाम हो उन्हीं की शिक्षाओं का नाम इस्लाम है। दीन की आवश्यक बातों में मैंने सफाई (स्वच्छता) तथा पाकी (पवित्रता) का अन्तर जाना नहाना और वुज़ू करना सीखा और ये सीखा कि वुज़ू के बिना न नमाज़ पढ़ सकते हैं न कुर्आन छू सकते हैं, पाँचों समय की नमाज़ें पढ़ना सीखा, रमज़ान के रोज़े रखना सीखा और ये जाना कि धनवानों पर अनिवार्य है कि वह हर वर्ष अपने माल का ढाई प्रतिशत निकाल कर अपने ग़रीब भाइयों को दें ये भी जाना कि जिसको मक्का नगर तक आने जाने का सामर्थ्य हो तो उसके लिए जीवन में एक बार हज करना भी अनिवार्य है. और बहुत से अच्छे आचरण की बातें भी सीखीं बहुत सी हलाल व हराम की बातें सीखीं। बहुत सी दीन की बातें अपने वालिद साहिब से घर पर सीखीं वालिद साहिब ने बताया कि जिस प्रकार अपने मुसलमान साथियों को सलाम करते हो हिन्दू साथियों को आदाब कहा करो और आदाब कहने में पहल करो ताकि उन पर तुम्हारा अच्छा प्रभाव पड़े, यदि वह पहले तुम को आदाब कहें तो उत्तर में कहो आपको बहुत बहुत आदाब, यदि वह अपने स्वभाव के अनुकूल नमस्कार कहें तो तुम उत्तर में कहो नमस्कार निर्माता को। वालिद साहिब ने यह भी बताया कि जब लड़का जवान हो जाये तो किसी जवान लड़की से मित्रता न करे उस को न घूरे कि यह महा पाप है आज कल भांति भांति के मोबाइल द्वारा जो जवान लड़के जवान लड़कियों से सम्बंध जुटाते हैं यह महा पाप है पिता जी ने बताया कि किसी जवान लड़के या किसी जवान लड़की से प्रेम करना उसको घूरना पाप है परन्तु अगर उस को ज़रूरत हो तो

उसका सहयोग करना पाप नहीं किसी ज़रूरत वाले की सहायता करना इस्लाम में पुण्य का कार्य है चाहे वह औरत हो चाहे मर्द। पिता जी ने बताया कि जब कोई लड़का अच्छी तरह जवान हो जाये और अपनी शिक्षा पूरी करके अपने पैरों पर खड़ा हो जाये तो उसके लिए इस्लाम में निकाह (विवाह) की व्यवस्था है यह सब बातें मकतब में छोटे बच्चों को न पढ़ाई जाती हैं न पढ़ाई जाना चाहिएं ये बातें तो जब लड़का व्यस्क हो जाये तो उसके बड़ों को चाहिए कि इस प्रकार की आवश्यक बातें उसको सिखायें। अतएव पिता जी ने मुझे यह भी बताया कि आज कल जो बाज़ लोग जो आत्महत्या करते हुए बम बिस्फोट करके लोगों की अकारण जानें लेते हैं या तो वह इस्लामिक शिक्षाओं से अपरिचित हैं या जान बूझ कर इस्लामिक शिक्षाओं का विरोध करके जहन्नम में अपना ठिकाना बनाते हैं इस्लाम में आत्म हत्या हराम है किसी की अकारण हत्या करना हराम है, जो व्यक्ति आत्म हत्या को वैध माने वह मुसलमान नहीं इसी प्रकार जो किसी की अकारण हत्या को वैध माने वह भी मुसलमान नहीं, आतंकवाद का इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। यह विशेष बातें जब मैं अपने साथियों को बताता हूं तो कुछ तो बहुत ध्यान से सुनते हैं और अपनाने का प्रयत्न करते हैं परन्तु बाज़ मित्र सुनी अनसुनी कर देते हैं।

अल्लाह तआला उन को सत्य मार्ग दर्शाए। कालेज के मुस्लिम छात्रों की दीनी शिक्षा की चिंता होनी चाहिए मेरी समझ में इसके सिवा और कोई मार्ग नहीं है कि घर के लोग उनकी दीनी शिक्षा का प्रबंध करें या दीनी जमाअ़तें उन से सम्पर्क करके उनको दीन की आवश्यक बातों से अवगत करायें अल्लाह हम छात्रों की मदद करे।

❖❖❖

अल्पसंख्यकों के प्रति.....

नब्बे के दशक से इस्राईल को जब से भारतीय सरकार ने बढ़ावा दिया है तब से कथित आतंकवाद का दानव विकराल रूप ले रहा है। इस्राईल और अमेरिका से यदि भारतीय सरकार सम्बन्ध तोड़ ले तो ये आतंकवाद का फर्जी बुलबुला तुरन्त फूट जाए और पूरे देश में शान्ति और अमन कायम हो जाए।

ख़ैर! बात अल्पसंख्यकों की हो रही थी कि इस्लाम ने ही विश्व को सर्वप्रथम बताया कि अल्पसंख्यकों के प्रति प्रशासक वर्ग और बहुसंख्यकों के क्या कर्तव्य हैं। उनके मान–सम्मान की रक्षा के साथ–साथ उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की बात इस्लाम ने ही बतायी है।

पवित्र हदीस में गैर मुस्लिम जनता और मुसलमान शासक के बारे में है कि "जो व्यक्ति (शासक) गैर मुस्लिम प्रजा पर अत्याचार करे या उस के अधिकारों में कटौती करे अथवा उसको अकारण कष्ट दे या उनको नाराज कर के उस की चीज ले ले तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कयामत (प्रलय) में उस पर मुकदमा दायर करेंगे।"

सोचिए! यदि दुन्या इस्लामी सिद्धान्तों पर अमल कर ले तो विश्व में व्याप्त अनेक विसंगतियों से छुटकारा मिल जाए और चैन व सुकून की जिन्दगी हर किसी के हिस्से में आए।

❖❖❖

सामान्य रूप से पाया जाने वाला पक्षी

दुन्या में पक्षी तो अनगिनत प्रकार के हैं, उनमें कुछ पक्षी तो ऐसे हैं जो शहरों में स्वतंत्रता से उड़ते फिरते हैं जैसे तोता, मैना, कबूतर और चील, कौवे आदि, इन सभी पक्षियों में कौवा एक मात्र पक्षी है जो लगभग हर देश और हर जगह मौजूद है, इसके अलावा कौवों की संख्या भी अन्य पक्षियों की तुलना में अधिक होती है। इसीलिए ये आम तौर पर हर समय और हर जगह दिखाई देते हैं। कौवों की कई क़िस्में हैं, लेकिन सभी एक दूसरे से बेहद मिलती–जुलती होती हैं। हमारे देश में जो कौवे पाए जाते हैं वह JACKDAW प्रकार के हैं। यह कौवों की एक विशेष प्रकार है। ये कौवे गहरे भूरे या स्याही लिए भूरे रंग के होते हैं। जिन की गर्दन के पंख हल्के भूरे होते हैं। कौवों की एक जंगली प्रजाति भी होती है। जंगली कौवा आम कौवे से बड़ा होता है।

कौवा बहुत बुद्धिमान पक्षी है। कहानी "प्यासा कौवा" आज भी दुन्या भर में पढ़ी जाती है, इसके अलावा यह तोते की आवाज़ की नक़ल भी कर सकता है। पूर्वी एशिया में इसे सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है और घर में पाला जाता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मुंडेर पर बैठे कौवे की 'काएं –काएं' को अतिथि के आगमन का प्रतीक माना जाता है।

कौवा मांस, अनाज, मनुष्य का बचा भोजन और अन्य छोटे पक्षियों के अंडे खा कर गुज़ारा करता है। यह फ़सलों विशेष कर मक्का की फ़सल को ख़ासा नुकसान पहुंचाता है। इसलिए किसान कौवों आदि को डराने के लिए खेतों में एक पुतला खड़ा कर देते हैं जिसे 'भच काग' या "JACKDAW SCARE CROW" कहते हैं।

क्या भालू ख़तरनाक होते हैं?

बच्चो! आपने अक्सर सड़क पर भालू का तमाशा होते हुए देखा होगा। देखने में तो यह बड़ा मासूम सा नज़र आता है लेकिन यह वास्तव में बेहद ख़तरनाक भी होता है। अगर उसे तंग किया जाए या वह ख़तरा महसूस करे तो बड़ी तेज़ी से प्रतिक्रिया करता है। भालू पेड़ पर चढ़ने में दक्ष होता है। भालू एक मांसाहारी स्तनधारी है यानी यह अपने बच्चों को दूध पिलाने वाला जानवर है। आमतौर पर इसका आहार बकरी, छोटे जानवर और मछलियां होती हैं। अगर भालू इन का शिकार न कर सके तो पौधे और घास फूस खा कर भी गुज़ारा कर लेता है। पेड़ों पर लगे शहद के छत्ते से शहद चुराना उसका पसंदीदा काम है। दुन्या भर में भालू की न्यूनाधिक चौंतीस प्रजातियां पाई जाती हैं जिनमें पांडा, हिमालियाई, ईमोरा भालू और बर्फीला भालू दुर्लभ प्रकार के हैं। भालू का उसके मांस और खाल के लिए शिकार किया जाता है।

उत्तरी क्षेत्रों में हिमालियाई काला भालू और दुर्लभ भूरा भालू पाया जाता है। काला भालू पेड़ पर चढ़ने में दक्ष होता है, उसकी छाती पर सफ़ेद रंग का V का निशान होता है। नेशनल पार्क और चिड़ियाघर में रखे जाने वाले भालू इन्सानों से घुल–मिल जाते हैं, फिर भी किसी अचानक दुर्घटना से बचने के लिए उनके चंगुल से दूर रहना चाहिए, इस जानवर की बाहें बेहद मज़बूत होती हैं।

(कान्ति सितम्बर 2016 से ग्रहीत)

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी की मदद से शैख सअ्दी के दो शेअरों का अनुवाद पढ़ये।

(1). इस नापाएदार उम्र पर भरोसा मत करो।

اس ناپائدار عمر پر بھروسا مت کرو

जमाने के इन्क़िलाब से बे खौफ़ मत हो जाओ

زمانے کے انقلاب سے بے خوف مت ہو جاؤ

हिन्दी अर्थः- इस अस्थायी आयु पर भरोसा कर के अपने निर्माता तथा अगले जीवन को भूल न जाओ समय के परिवर्तनों को देखो एक व्यक्ति आज है कल नहीं रहेगा अतः इस सत्य को सामने रखो।

सीखः- इस अस्थायी जीवन में अपने निर्माता के आज्ञाकारी रहो यहां सत्कर्म कर के तथा भले कर्म कर के अगले जीवन के सुख के लिए सामग्री जुटा लो अन्यथा अगले जीवन में दुख भोगना पड़ेगा।

(2). हुकूमत, मन्सब और ख़ुद्दाम पर भरोसा मत करो

حکومت، منصب اور خدّام پر بھروسا مت کرو

कि तुम से पहले हुकूमत वाले, मन्सब वाले और खादिमों वाले गुज़रे हैं

کہ تم سے پہلے حکومت والے، منصب والے اور خادموں والے گزرے ہیں

और तुम्हारे बाद भी हुकूमत वाले, मन्सब वाले और खादिमों वाले गुजरेंगे

اور تمہارے بعد بھی حکومت والے، منصب والے اور خادموں والے گزریں گے

हिन्दी अर्थः- इस संसार में अगर तुम को राजपाट मिल जाये मंत्री बन जाओ, प्रधान मंत्री बन जाओ और बहुत से नौकर चाकर तुम्हारे नीचे हों तो इन सब पर भरोसा मत करो, इतिहास के पन्नों में पढ़ो कितने शक्ति शाली राजा महा राजा गुज़रे हैं आज वह नहीं हैं कितने मंत्री, महा मंत्री, नौकर चाकर वाले गुज़रे हैं आज वह नहीं हैं, तुम्हारे पीछे भी ऐसे लोग आते जाते रहेंगे।

सीखः- इस संसार में तुम शासक हो या अधिकारी निर्धनों, अनाथों, विधवाओं और पीड़ितों की सहायता कर के अगला जीवन संवार लो। ◆◆